युवोदय



Yuva FEST 2026



जिला प्रशासन धमतरी










खजाना खोज | मोबाइल गेमिंग
थॉन | तकनीकी प्रश्नोत्तरी | औ
बहुत



युवा फेस्ट 2026

"जहाँ प्रतिभाएँ, अवसर को मिलती है"

साहित्य मंच

कार्यक्रम दिनांक :– 25 / 04 / 2026

कार्यक्रम स्थल :– बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव शासकीय महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

आयोजक संस्था :– जिला प्रशासन धमतरी

विषय

1.धमतरी की सांस्कृतिक विरासत
2.महानदी
3.माँ
4.जल है तो कल है
5.नारी शक्ति
6.युवा–बेहतर भारत का भविष्य
7.धमतरी में विकास का बढ़ता सोपान
8.छत्तीसगढ़ी लोककला
9.धमतरी अंचल के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वतंत्रता आंदोलन में जिला धमतरी की भूमिका

संचालक मंडल

कार्यक्रम प्रभारी :– **श्री हेमलाल कुरेशिया**
मो.नं.–9907768286

प्रबंधन समिति :– **श्री दीपचंद भारती**
मो.नं.– 7974008830

श्री डुमन लाल ध्रुव
मो.नं.– 9424210208

निर्णायक गण

डॉ. हीरा महावर
मो.नं.– 9340839997

डॉ. सरिता दोशी
मो.नं.– 9826386166

श्री श्याम अग्रवाल
मो.नं.– 9425205687

श्रीमती कामिनी कौशिक
मो.नं.– 8770060204

शुभकामना संदेश



प्रिय बच्चों,

युवा उत्सव के अंतर्गत आयोजित साहित्य मंच केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि युवा चेतना, सृजनशीलता और सांस्कृतिक जागरण का सशक्त माध्यम बना। इस मंच पर युवाओं द्वारा प्रस्तुत स्वरचित काव्य एवं निबंधों ने यह सिद्ध किया कि साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं अपितु समाज, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण की जीवंत शक्ति है।

युवाओं में साहित्य के प्रति अभिरुचि जागृत करने, साहित्य साधना के माध्यम से संवेदनशील एवं आत्मनिर्भर व्यक्तित्व निर्माण करने की यह पहल अत्यंत सराहनीय है। प्रत्येक प्रतिभागी ने अपनी रचनाओं से विचारों की गहराई, भावनाओं की गरिमा और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का परिचय दिया।

सभी युवा प्रतिभाओं को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु अनंत शुभकामनाएँ। आप सभी की लेखनी समाज को नई दिशा दें, प्राचीन संस्कृति को समृद्ध करें और देश के उत्थान में प्रेरक भूमिका निभाएं यही मंगल कामना है।

"युवा शब्दों से जब चेतना लिखते हैं, तब समाज का भविष्य उजाला बनता है।
सृजन की लौ से संस्कार जगते हैं, और राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है।"

अबिनाश मिश्रा
कलेक्टर
जिला–धमतरी
मो. नं. 7838043346

शुभकामना संदेश



जिला प्रशासन धमतरी द्वारा युवा फेस्ट 2026 – "युवोदय" पत्रिका का प्रकाशन युवाओं की सृजनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने की सराहनीय पहल है। साहित्य मंच के माध्यम से महाविद्यालय स्तरीय विद्यार्थियों ने कविता, कहानी एवं निबंध लेखन के जरिए अपनी संवेदनाओं, विचारों और रचनात्मकता को प्रभावशाली रुप में अभिव्यक्त किया है। यह पत्रिका युवा प्रतिभाओं की साहित्यिक चेतना और बौद्धिक क्षमता का सुंदर प्रतिबिंब है। मुझे विश्वास है कि "युवोदय" विद्यार्थियों को सतत सृजन और साहित्य साधना के लिए प्रेरित करेगी तथा समाज में सकारात्मक विचारों का प्रसार करेगी। इस उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु सभी प्रतिभागियों एवं आयोजक जिला प्रशासन धमतरी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

विनोद कुमार पाठक
प्राचार्य,
बीसीएस पीजी कॉलेज, धमतरी

शुभकामना संदेश!



''आज का युवा कल का इतिहास है''। युवावस्था केवल उम्र का पड़ाव नहीं, बल्कि अदम्य साहस, नई सोच और कुछ कर गुजरने के जुनून का नाम है आधुनिक जीवनशैली और सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण साहित्य से दूरी बढ़ी है युवाओं को साहित्य से जोड़ने के लिए युवा फेस्ट में साहित्य से जोड़ने का सफल प्रयास किया गया है।

छत्तीसगढ़ के धमतरी में युवाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से माटी की खुशबू को जीवंत कर दिया है। इन उभरते कवियों ने अपनी कविताओं में धमतरी की सांस्कृतिक विरासत, महानदी की महिमा, जल संरक्षण, नारी शक्ति और युवाओं की ऊर्जा जैसे विषयों को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से पिरोया है। धमतरी की सांस्कृतिक विरासत युवाओं ने अपनी कविताओं में धमतरी की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ों को याद किया है जीवनदायिनी महानदी धमतरी की जीवनरेखा और छत्तीसगढ़ की गंगा कहलाने वाली महानदी पर युवाओं ने बहुत भावुक और प्रेरणादायक रचनाएं लिखी हैं। माँ और जल है तो कल है (जल संरक्षण) आज के युवा जल के महत्व और 'मां' के त्याग को जोड़कर समाज को आईना दिखा रहे हैं। नारी शक्तियुवा कवियों ने अपनी रचनाओं में नारी के बदलते स्वरूप, उनकी आत्मनिर्भरता और शक्ति का गुणगान किया है। युवा– बेहतर भारत का भविष्य देश और धमतरी के युवाओं में एक नया जोश और उम्मीद है। वे मानते हैं कि कल का भारत उन्हीं के कंधों पर टिका है। धमतरी में विकास का बढ़ता सोपान शहर और ग्रामीण अंचल में हो रहे बदलावों को युवा लेखकों ने अपनी कविताओं में जगह दी है, छत्तीसगढ़ी लोक–कला अपनी माटी की पहचान–छत्तीसगढ़ी लोक कला (नाचा, सुआ नृत्य, पंथी, राउत नाचा)–को युवा कविताओं में विशेष स्थान मिला है। युवा कवियों की यह पहल दिखाती है कि वे अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े हैं और समाज को एक सकारात्मक दिशा देने की अद्भुत क्षमता रखते हैं।

धमतरीः विकास और संस्कृति का संगम
महानदी की कल–कल में, धमतरी का मान बसा है,
गंगरेल की लहरों में, खुशहाली का धान बसा है।
'जल है तो कल है' का संकल्प, यहाँ का हर युवा लेता है,
नारी शक्ति के साहस से, नया इतिहास जन्म लेता है
छत्तीसगढ़ी लोक–कला, हमारी माटी की असली पहचान,
पंथी, करमा और ददरिया में झलकता है गौरव गान।
युवाओं के कंधों पर अब, बेहतर भारत का भार है,
धमतरी के विकास का सोपान, प्रगति का नया आधार है।
बढ़ते कदम, ऊँची उड़ान, हम गढ़बो नवा धमतरी,
संस्कृति और आधुनिकता की, जहाँ दिखेगी सूरत सुनहरी।

आपकी कलम से निकला हर शब्द समाज के लिए एक नई रोशनी बने। आपकी रचनात्मकता और शब्दों का जादू सदा बना रहे। निरंतर लिखते रहें! अपनी कविताओं के माध्यम से अपनी मौलिक पहचान बनाएं। याद रखें, एक सच्चा कवि वही है जो अपने अंतर्मन की आवाज़ को कागज़ पर उतार सके।

बहुत–बहुत शुभकामनाएँ!''

हेमलाल कुरेशिया
कार्यक्रम प्रभारी एवं
कार्यपालन अभियंता जल प्रबंध संभाग–रुद्री
मो. नं. 9907768286

शुभकामना संदेश



''लेखनी वह शस्त्र है, जो बिना रक्त बहाए क्रांति लाने का सामर्थ्य रखती है।''

प्रिय युवा साथियों,

युवा उत्सव के अंतर्गत आयोजित 'साहित्य मंच' में आप सभी की सक्रिय भागीदारी और आपकी लेखनी से निकले स्वरचित काव्यों व निबंधों,लेखों की प्रस्तुति सुनना/देखना अत्यंत हर्ष का विषय है। साहित्य केवल शब्दों का चयन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण और परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम है।

आपकी साधना, देश की शक्ति है। आप सभी की साहित्यिक अभिरुचि दर्शाती है कि हमारी युवा पीढ़ी केवल तकनीक तक सीमित नहीं है बल्कि हमारी जड़ों और संवेदनाओं से भी गहराई से जुड़ी है।

मौलिक लेखन आपको स्वतंत्र वैचारिक शक्ति प्रदान करता है, जो आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की पहली सीढ़ी है।आपकी कलम से निकला हर शब्द समाज को नई दिशा देने की सामर्थ्य रखता है।

आह्वान

आज जब हम एक नए भारत की नींव रख रहे हैं, तब आप जैसी युवा शक्ति पर ही हमारी संस्कृति और राष्ट्र के उत्थान का उत्तरदायित्व है। अपनी लेखनी को सत्य, न्याय और मानवीय मूल्यों का संबल बनाइये। आपकी रचनाएँ केवल पन्नों तक सीमित न रहें, बल्कि वे समाज में सकारात्मक बदलाव की मशाल बनें।

''अभी तो असली उड़ान बाकी है, परिंदे का इम्तिहान बाकी है,
अभी–अभी तो लांघा है समंदरों को, अभी तो पूरा आसमान बाकी है।''

आप सभी के उज्जवल भविष्य, निरंतर साहित्य साधना और राष्ट्र निर्माण में आपके योगदान के लिए मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएं!

''स्नेहिल शुभकामनाओं के साथ''

जय हिंद! जय युवा शक्ति!

दीपचंद भारती
(राजस्व निरीक्षक, जिला कार्यालय)
कार्यक्रम मंडल सदस्य धमतरी
मो. नं. 7974008830

शुभकामना संदेश



युवा फेस्ट 2026 के साहित्य मंच में छत्तीसगढ़ प्रदेश के विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन प्रतिभागियों ने अपनी स्वरचित रचनाओं के माध्यम से संवेदना, समाज और सृजनशीलता का सुंदर परिचय दिया है। यह नवांकुर रचनाकारों के भीतर छिपे शब्दों के उजाले को पहचानने का उत्सव है। सभी प्रतिभागियों को हार्दिक शुभकामनाएं कि उनकी लेखनी निरंतर जनजीवन, प्रकृति और मनुष्य की आत्मा से संवाद करती रहे। निर्णायक मंडल के प्रति विशेष आभार जिन्होंने निष्पक्षता और संवेदनशील दृष्टि से युवा प्रतिभाओं का मूल्यांकन किया। इन नई आवाजों को साहित्यिक पहचान देने की दिशा में जिला प्रशासन का प्रयास अत्यंत प्रेरणादायी और स्वागत योग्य पहल है।

पेड़ के पास
एक शब्द चुप था
उसे बच्चे ने कविता कहा।
कॉपी के भीतर
धान की गंध थी
और भविष्य
धीरे–धीरे लिख रहा था
अपना पहला नाम।

डुमन लाल ध्रुव
कार्यक्रम मंडल सदस्य
धमतरी
मो. नं. 9424210208

शुभकामना संदेश!



बेहद खुशी और गर्व का क्षण युवा फेस्ट 2026 का आयोजन जिला प्रशासन के तत्वावधान में सुखद, सफल और प्रशंसनीय होने के साथ–साथ सार्थक सिद्ध हुआ जब साहित्य मंच जैसे प्लेटफॉर्म नवोदित रचनाकारों को अपनी रचना धर्मिता निभाने के लिए कहानी, कविता, आलेख, निबंध इत्यादि विधाओं का अनुपम अद्भुत और स्नेहिल वातावरण प्रदान किया।मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि मैं वहां निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में अपना जिम्मेदारी बखूबी निभा सकी। उस अवसर पर मुझे एक से बढ़कर एक प्रतिभाओं को पढ़ने,सुनने प्रेरित और प्रोत्साहित करने का सौभाग्य मिला।मैं पुनः जिला प्रशासन को हार्दिक धन्यवाद देती हूं और साहित्य मंच के किताब के संपादक, आयोजन प्रभारी एवं पूरी टीम जिनके अथक प्रयास से साहित्य मंच का सुंदर आयोजन सफलीभूत हुआ और यह बहुपयोगी किताब के रूप में हम सबके हाथों में होगा,,, मुझे पूर्ण विश्वास है। मैं आप सबके उज्जवल भविष्य की शुभकामना करते हुए भविष्य में ऐसे सफल आयोजन की शुभेच्छा रखती हूं। युवाओं के लिए यही कहना चाहती हूं,,

तुम चले तो आंधी–तूफान, खुद ही चल पड़ेंगे
सागरों की बात क्या, हिमगिरी सरीखे गल पड़ेंगे
मत समझना ये निशाएं पथ तुम्हारा रोक लेंगी
तुम जले, तो दीप क्या, सूरज हजारों जल पड़ेंगे

स्नेहिल शुभकामनाओं के साथ,,
आपकी अपनी ही

कामिनी कौशिक
निर्णायक मंडल सदस्य
युवा फेस्ट 2026, धमतरी
मो. नं. 8770060204

शुभकामना संदेश



युवा मन जब शब्दों से सृजन करता है,
तभी समाज में नवचेतना का सूर्योदय होता है।
कलम की ज्योति सपनों को आकार देती है,
और साहित्य संवेदनशील भविष्य का निर्माण करता है।

जिला प्रशासन धमतरी के तत्वावधान में आयोजित "युवा फेस्ट 2026" अंतर्गत कविता, कहानी एवं निबंध लेखन एवं पठन प्रतियोगिता का यह अभिनव एवं प्रेरणादायी प्रयास अत्यंत सराहनीय है। माननीय कलेक्टर श्री अबिनाश मिश्रा जी की दूरदर्शी सोच, युवाओं को सकारात्मक दिशा देने की प्रतिबद्धता तथा उनकी प्रेरक पहल ने धमतरी जिले की प्रतिभाओं को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति का सुंदर मंच प्रदान किया है।

माननीय कलेक्टर श्री अबिनाश मिश्रा जी के नेतृत्व में जिला प्रशासन की समर्पित टीम तथा पी.जी. कॉलेज धमतरी के प्राचार्य श्री विनोद पाठक जी के सहयोग से यह आयोजन अत्यंत सफल एवं प्रेरणादायी रूप में संपन्न हुआ। यह आयोजन केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि युवा चेतना, साहित्यिक संस्कार और सृजनशील ऊर्जा का उत्सव बनकर उभरा।

मुझे निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में प्रतिभाशाली युवा रचनाकारों की उत्कृष्ट रचनाओं को पढ़ने, सुनने एवं समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। युवाओं की भावनात्मक गहराई, विचारशीलता और साहित्य के प्रति समर्पण ने मन को अत्यंत प्रभावित किया। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि आज की युवा पीढ़ी केवल सपने नहीं देख रही, बल्कि अपनी लेखनी से समाज में सकारात्मक विचारों का प्रकाश भी फैला रही है।

पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशित पुस्तक युवा प्रतिभाओं की रचनात्मकता का सुंदर दस्तावेज बनकर आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करेगी।

इस भव्य एवं सफल आयोजन हेतु जिला प्रशासन धमतरी, श्री दीपचंद भारती जी एवं श्री डुमन लाल ध्रुव जी के कुशल निर्देशन, समर्पण एवं अथक प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सभी युवा रचनाकारों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाओं सहित :–

"अपनी लेखनी को केवल शब्दों तक सीमित मत रखिए,
उसे संवेदना, संस्कार और सकारात्मक परिवर्तन की आवाज बनाइए।"

स्नेह एवं शुभकामनाओं सहित...

डॉ. सरिता दोशी
निर्णायक मंडल सदस्य
युवा फेस्ट 2026, धमतरी
मो. नं. 9826386166

शुभकामना संदेश

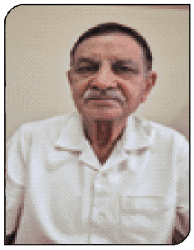

''जहाँ प्रतिभा को मिले अवसर''—YUVA FEST—2026 का ये ध्येय वाक्य 25 अप्रैल को पी.जी कॉलेज ग्राउंड, धमतरी में साकार होते देखा।

एक निर्णायक के रूप में जब मंच से करीब 65 युवाओं को ''माँ'', ''महानदी'', ''नारी शक्ति'' जैसे विषयों पर अपनी मौलिक काव्य रचनाएँ सुनाते देखा, तो मन गदगद हो उठा। 8000 विद्यार्थियों की उपस्थिति ने सिद्ध कर दिया कि धमतरी की नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत और सृजनशीलता दोनों के प्रति कितनी जागरूक है।

इस ऐतिहासिक आयोजन की सफलता के पीछे जिले के यशस्वी कलेक्टर महोदय की व्यक्तिगत रुचि और तत्परता उल्लेखनीय रही। मंच पर उनकी उपस्थिति, प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन और पूरी प्रशासनिक टीम का समन्वय देखते ही बनता था। जब प्रशासन स्वयं साहित्य और संस्कृति का संरक्षक बन जाए, तो युवा पीढ़ी का भविष्य उज्ज्वल होना निश्चित है।

आयोजक समिति, शिक्षकगण एवं सभी कार्यकर्ताओ को हृदय से साधुवाद। यह पुस्तक उन सभी नवोदित रचनाकारों के लिए प्रेरणा बने, जिनकी लेखनी से कल का बेहतर भारत गढ़ा जाएगा।

मेरी शुभकामनाएँ कि YUVA FEST का यह दीप हर वर्ष ऐसे ही प्रज्वलित हो और धमतरी की साहित्यिक—सांस्कृतिक धारा अविरल बहती रहे।

''जल है तो कल है'', ''युवा है तो भविष्य है।''

सादर

श्याम अग्रवाल
निर्णायक मंडल सदस्य
युवा फेस्ट 2026, धमतरी
मो. नं. 9425205687

शुभकामना संदेश

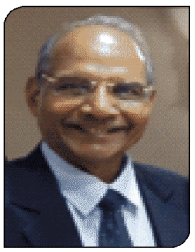

जिला प्रशासन धमतरी द्वारा युवा फेस्ट 2026 का बी सी एस पीजी कालेज धमतरी में 24 एवं 25 अप्रैल को आयोजन किया गया,जिले मे प्रथम बार इस तरह का अद्भुत पर अत्यंत सफल आयोजन हुआ इसके लिए जिले के कलेक्टर माननीय अबिनाश मिश्रा एवं उनकी समर्पित टीम को बधाई देता हूं इस आयोजन में साहित्य मंच के कार्यक्रम में मुझे निर्णायक के रूप में सम्मिलित होने का अवसर मिला, युवाओं को मां एवं छत्तीसगढ़ विषय पर स्वरचित कविता एवं लेख का पठन करना था, छत्तीसगढ़ के विभिन्न महाविद्यालयों के युवाओं ने इस प्रतिस्पर्धा में भाग लिया, युवाओं ने बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रस्तुती दी, रचनाओं में मौलिकता देखने को मिली, विषय के महत्व को विद्यार्थियों ने बहुत ही उत्तम तरह से पेश किया,जिन युवाओं ने पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें मैं अनेकानेक बधाई देता हूं और जो उसमें कुछ अंकों से पीछे रह गए उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। प्रयास करते रहे भविष्य में सफलता आप का इन्तजार कर रही है..... ऐसे आयोजनों की महती आवश्यकता है, युवाओं की छिपी प्रतिभा को इसी तरह से पंख दिया जा सकता है.....!

डॉ हीरा महावर
निर्णायक मंडल सदस्य
युवा फेस्ट 2026, धमतरी
मो. नं. 9340839997

सारणी

स.क्र.	रचना का शीर्शक	रचनाकार का नाम	निर्धारित विषय	पेज क्र.
1	2	3	4	5
1	कविता	कु. हुलसी साहू	नारी शक्ति	01
2	कविता	कु. पायल	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	02
3	कविता	कु. हुलसी साहू	माँ	03
4	कविता	कु. अंशिता भारती	माँ	04
5	निबंध	श्री सोमेश्वर प्रसाद गंजीर	नारी शक्ति	05–06
6	कविता	कु. कुन्ती साहू	माँ	07
7	कविता	कु. नियति साहू	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	08
8	कविता	कु. सोनम साहू	नारी शक्ति	09
9	निबंध	कु. गीतांजली नाग	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	10
10	निबंध	कु. रूपाली गंजीर	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	11–12
11	निबंध	कु. धात्री देवांगन	नारी शक्ति	13–15
12	कविता	श्री नीरज कुमार साहू	महानदी	16
13	कविता	श्री डुपेश कुमार	पीरा महतारी भाखा के	17
14	कविता	श्री अमृतांशु निराला	छत्तीसगढ़ी लोककला	18
15	निबंध	कु. संगीता साहू	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	19–20
16	कविता	श्री कशिश पाल	नारी शक्ति	21
17	कविता	कु. गीता साहू	धमतरी की सांस्कृतिक विरासत	22–23
18	कविता	कु.अंजली सिन्हा	छत्तीसगढ़ी लोककला	24
19	निबंध	कु. कल्याणी साहू	नारी शक्ति	25
20	कविता	श्री लिलेश	माँ	26
21	कविता	श्री रिजवान रिजवी	बस्तर	27
22	कविता	कु. वैशाली प्रजापति	नारी शक्ति	28
23	कविता	श्री कुनाल हिरवानी	धमतरी में विकास का बढ़ता सोपान	29
24	कविता	कु. धनुश्का राजश्मि ध्रुव	माँ	30
25	निबंध	श्री चैतन्य प्रसाद	जल है तो कल है	31–32
26	निबंध	कु. रोमा साहू	नारी शक्ति	33–34
27	कविता	श्री खुमान सिंह भाट	जल है तो कल है	35

सारणी

स.क्र.	रचना का शीर्शक	रचनाकार का नाम	निर्धारित विषय	पेज क्र.
1	2	3	4	5
28	कविता	श्री उपेन्द्र कुमार	धमतरी की सांस्कृतिक विरासत	36
29	कविता	श्री खुमान सिंह भाट	छत्तीसगढ़ी लोककला	37
30	कविता	कु. क्षमता	नारी शक्ति	38
31	कविता	कु.गीता सारथी	नारी शक्ति	39
32	कविता	कु. दीक्षा ध्रुव	नारी शक्ति	40
33	कविता	कु. माधुरी मारकंडे	नारी शक्ति	41
34	कविता	श्री जयंत सिन्हा	धमतरी की सांस्कृतिक विरासत	42
35	कविता	कु. त्रयंबिका साहू	नारी शक्ति	43
36	कविता	कु.झरना सेन	छत्तीसगढ़ी लोककला	44
37	कविता	श्री मोजेश कुमार साहू	धमतरी की सांस्कृतिक विरासत	45
38	कविता	कु. टिकेश्वरी साहू	नारी शक्ति	46
39	कविता	श्री जयंत कुमार	छत्तीसगढ़ी लोककला	47
40	कविता	श्री चन्द्रशेखर सोनी	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	48
41	निबंध	कु. रूची	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	49–50
42	निबंध	कु. ठामेश्वरी साहू	छत्तीसगढ़ी लोककला	51
43	निबंध	श्री नेहल गौतम	माँ	52
44	कविता	श्री शशांक कंशारी	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	53
45	निबंध	कु. अकांक्षा साहू	छत्तीसगढ़ी लोककला	54–55
46	कविता	कु. प्रेमलता साहू	नारी शक्ति	56
47	निबंध	कु. निकिता ताम्रकार	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	57–58
48	निबंध	श्री गुलशन कुमार	नारी शक्ति	59
49	निबंध	श्री तोशेन्द्र कुमार साहू	धमतरी की सांस्कृतिक विरासत	60
50	निबंध	कु. टुकेश्वरी साहू	महानदी	61
51	निबंध	श्री गौरव सिन्हा	महानदी	62
52	कविता	श्री संदीप	नारी शक्ति	63
53	कविता	डॉ.शैलेन्द्र कुमार गुप्ता	माँ	64
54	कविता	कु.अर्पणा शर्मा	माँ	65
55	कहानी	कु. योगिता साहू	युवा–बेहतर भारत का भविष्य	66

नारी–शक्ति



नाम – हुलसी साहू
पिता – श्री गिरधर राम
पता – ग्राम–धोबनपुरी, तहसील–गुरूर, जिला–बालोद
शिक्षा – बी.एड. (एम.जे.कॉलेज भिलाई)
मो.न. – 7067166048

जिस आँगन में उसने पहले कदम रखा,
वहाँ, वह केवल एक बेटी नहीं, अपितु अस्तित्व का गौरव बनी।

हाँ, वह स्त्री ही है, जो मानवीय संवेदनाओं का आधार है,
वह नन्ही कली बनकर माँ की गोद मे खिलखिलाती है,
और वक्त आने पर दो परिवारों की धुरी बन जाती है।
जीवनपथ पर चाहे फूल मिले या अंगारे,
उसके बढ़ते कदम कभी नहीं डगमगाते।

कोमलता उसकी कमजोरी नहीं, श्रृंगार है उसका
उसके पद चिन्ह, उस मार्ग को पवित्र कर देते,
जिस पर पड़ते उसके कदम,
यदि पुत्र वंश का नाम है,
तो वह इस संपूर्ण संसार की संचालिका है।

इतिहास में गर बयॉ करूँ–
कभी सीतारूप में पतिव्रता नारी
कभी द्रौपदी की स्वाभिमान
अहिल्या सम सुंदरता की मूरत
और अनुसुईया सी महान

आधुनिक युग की बात करूँ–
कभी वह प्रतिभा पाटिल का धैर्य है,
कभी लौहसम इंदिरा की साहस
कभी कल्पना की ऊँची उड़ान
कभी मधुर सुर में लता की गुनगुनाहट

जब बात आन–बान–शान की आए,
तो वह रणचण्डी बन रणभूमि में मुस्काती है
पीठ पर बाँध मातृत्व को, रिपु–दल से टकराती है
इतिहास गवाह है, झाँसी की रानी बनकर
उसने स्वतंत्रता की इबारत लिखी।

आज मैं पूछती हूँ – कौनसा ऐसा शिखर है
जिसे नारी ने छुआ नहीं ?
वह हर कालखण्ड में
भिन्न रूपों में स्वयं को सिद्ध करती आई है,

वह बहू बनकर घर संवारती है,
बेटी बनकर खुशबू बिखेरती है,
मानवता की हर धड़कन में
बस यहीं गूंज है –
कि स्त्री, इस सृष्टि का सबसे सुंदर
और शक्तिशाली सच है।

''विषय–युवा बेहतर भारत का भविष्य''



नाम – पायल
कक्षा – एम.ए. (हिन्दी)
कॉलेज – रानी रश्मिदेवी महाविद्यालय खैरागढ़
मो.न. – 9109353603

शीर्षक–उठो अरूण

उठो अरुण प्रभात, नवकिरण ,तुम्हें जगा रही.....
चीरकर तिमिर प्रभा, दिशा तुम्हे दिखा रही.....

तू तेज़ माथ में लिए, गीता साथ में लिए,
चमक उठे यह आर्यावर्त इतिहास हाथ में लिए,

कृष्ण के हो अंश तुम,बनके काल कंस तुम,
राष्ट्र हित में प्राणों का,सौगात तुम लिए हुए,

उठो गुलाल लाल तुम, भाल में लिए हुए,
कर्तव्य, मातृसेवा को, ख्याल में लिए हुए।

बढ़ो ये पथ प्रशस्त है, तू खुद ही अपना शस्त्र है
साधना एकत्र है, यही वो पुण्य सत्र है

तुम विजय के शंखनाद हो, तुम्हीं भगत, आजाद हो,
तो शिव धनुष को तोड़ दो, अब शौर्य का निनाद हो।

उठो सवाल !
उठो सवाल यम द्वार, प्रश्न यम से तुम करो
सत्य के प्रकाश में, अष्टावक्र से चलो.....

उठो अरुण प्रभात, नवकिरण, तुम्हें जगा रही,
चीरकर तिमिर प्रभा, दिशा ,तुम्हें दिखा रही।

उठो पार्थ !
स्वार्थ, इच्छाएं सारी, मोह अपने त्यागकर,
कर्तव्य कर्मभूमि में, काम तू निष्काम कर,

उठो कि विश्वभारती के, मान को लिए हुए
शीश, थाल, हाथ में, आरती लिए हुए

उठो गुलाल लाल तुम, भाल में लिए हुए
ध्येय मातृसेवा को, ख्याल में लिए हुए.....

उठो अरुण प्रभात, नवकिरण तुम्हे जगा रही
चीरकर तिमिर प्रभा, दिशा तुम्हें दिखा रही.....

माँ

नाम – हुलसी साहू
पिता – श्री नारद राम साहू
शिक्षा – बी.एस.सी. (चतुर्थ सेमेस्टर)
मो.न. – 9238008915
कॉलेज – एम.वी.वी.पी.जी.कॉलेज भखारा

एक अक्षर का शब्द है जो माँ, जिसमें समाया सारा जहाँ ।
जन्मदायिनी बन के सबको अस्तित्व में लाती वो ।
तभी तो माँ कहलाती और वंश को आगे बढ़ाती ।
तभी तह अपने धर्म को, माँ बनकर निभाती है ।।

माँ की लीला है न्यारी ,जिसे न समझे दुनियाँ सारी ।
नौ माह तक कोख में रखती ,हर पीड़ा को है सहती ।
सुनने को व्याकुल वो रहती, अपने बच्चे की किलकारी ।।

सर्दी, गर्मी या हो बरसात, हर मौसम में लूटती प्यार,
कभी न कम होने देती, अपनी ममता का एहसास।।
खुद भूखी रहती पर वो, आँचल से दूध पिलाती है,
और अपने बच्चे का ,पेट भर देती है।।

बलिदानों की वो है जननी, जब भी आये कोई विपत्ति,
बन जाती–तब वो चण्डी, कभी नहीं वो पीछे हटती ।
चाहे घर हो या रण भूमि ,
पर बच्चों पर कभी भी ,कोई आँच न आने देती ।।

माँ तेरे रूप अनेक ,कभी सरस्वती कभी लक्ष्मी ।
माँ देती शिक्षा और संस्कार, तभी बच्चों का होता बेड़ा पार ।
ढाल बनकर बड़ी वो रहती, हर हाल में बच्चों के साथ।
तभी तो बच्चों को ,मिलती जाती कामयाबी ।।
सदा ही लुटाती बच्चों पर, अपनी ममता स्नेह प्यार ।
माँ तेरी लीला है अपरंपार, जिसको समझ न सका संसार ।

इसलिए तो कोई उतार, न सका माँ का कर्ज ।
तभी तो जगत जननी, माँ ही कहलाती है ।।
माँ का रूप प्रकृति की जान, माँ हो बच्चे की भगवान ।।
माँ ममता का बड़ा बगीचा, माता ने जीवन को सीचा ।।
माँ का सिर पर इतना भार, सात जन्म नहीं सके उतार ।।
माँ होती है संसार की दाता, माता बिना जन्म नहीं पाता।।
माँ ही करती है जीवन रक्षा, माँ का आँचल सभी सुरक्षा।।
माँ ही जन्मी माँ ही बढ़ाई, पीना खाना माँ सिखलाई ।।
माँ से माया माँ से काया, माँ से हमने है सब पाया।।
माँ को शत्–शत् करे नमन, माँ ही अमन माँ चमन ।।

माँ की ममता सागर गहरी , माँ से बढ़कर कौन सहारा ।
दुख की घड़ी में साथ निभाए, माँ ही बनती जीवन तारा।।

माँ की बातें अमृत जैसी, हर पीड़ा को दूर भगाए ।
माँ की चरणों में है स्वर्ग, जो सिर झुकाए सुख ही पाए ।।

माँ



नाम – अंशिता भारती
कक्षा – बी.एस.सी.(बायो) पी.जी.डी.सी.ए. (अध्ययनरत)
कॉलेज – बी.सी.एस. पी.जी. कॉलेज धमतरी
निवास – आमातालाब रोड धमतरी
मो.न. – 8305877828



कोख–गर्भ की गहराई से, जीवन स्वर था आया,
पीड़ा को मुस्कान बनाकर, माँ ने मुझे सजाया।

नींदें त्यागी, स्वप्न सँवारे, आँचल नेह बरसाया,
अपने हर अधूरेपन में भी, मेरा कल चमकाया।



ममता उसकी सागर जैसी, गहरी, निर्मल न्यारी,
हर ठोकर पर हाथ थाम ले, बन जाती सहचारी।

समय बढ़ा, मैं दूर हुई तो, आँखें दर–राह निहारी
मूक पुकारे हर पल कहती, लौट आओ मेरी प्यारी।

ममता कहती सुखी रहो तुम, कर्तव्य पुकारे "देना"
अंतर्मन में रोज़ यही है, कुछ देना ''कर्ज'' चुकाना।

माँ के ऋण से उऋण हो पाना, क्या संभव हो पाता ?
जन्मों–जन्मों का यह स्नेह बंधन, कौन चुका पाता ?



फिर भी इतना धर्म निभाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ,
कृतज्ञ हृदय के हर स्वरसे, बस माँ का मान बढ़ाऊँ।



माँ ही प्रथम पुकार हमारी माँ ही अंतिम छाया,
जिसने ये जीवन दिया हमें, वही ईश्वर की माया।

तू छोड़ दूर चली, फिर कैसे तुझको पाऊँ माँ,
पुनर्जन्म लूँ सहस्त्रों बार, तेरी ही कोख में माँ।

हर जन्म में तेरी ही ममता, का मैं अधिकार पाऊँ माँ,
तेरे बिना ये जग सूना, बस तुझमें ही घर पाऊँ माँ।

नारी शक्ति



नाम– सोमेश्वर प्रसाद गंजीर
कक्षा – एम.एस.सी भौतिकी
कॉलेज– बी.सी.एस.शास.स्ना. महाविद्यालय धमतरी
मो.न. – 7806085717

''नारी को कमजोर न समझो नारी गुण की खान।
नारी ने पैदा किये राम, कृष्ण, हनुमान।"

मेरी मातृभूमि भारत जो कभी "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" (मनुस्मृति 3.56) की भावना से सदियों से नारियों को देवी मानकर पूजता आया है। ये वो भारत है जहाँ एक नारी के हरण करने से पूरे राक्षस कुल की लंका जला दी गई, ये वही भारत है जहाँ एक नारी के वस्त्रहरण करने पर सौ भाइयों की चिता जलानी पड़ी। आज वही भारत की नारियां शिक्षा से लेकर संस्कार, खेल से लेकर अविष्कार, विज्ञान से लेकर तकनीक, और साहित्य से लेकर सृजन हर क्षेत्र में भारत का डंका बजा रही हैं।

<u>नारी शक्ति के समक्ष चुनौतियां</u>–

लिंगानुपात = (943 / 1000)

महिला साक्षरता = (65.46%)

वर्तमान परिस्थिती में नारी शक्ति के समक्ष निम्नलिखित चुनौतियां हैं :–

(1) महिला शांति और सुरक्षा सूचकांक 2025–26 के अनुसार भारत 181 देशों में से 131वें (0.607) स्थान पर है।
(2) यौन तस्करी और नाबालिकों के खिलाफ अपराध के मामले में भारत 7वीं सबसे खराब स्थिति में है।
(3) विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, भारत में लगभग हर चौथी महिला (लगभग 23%–25%) ने अपने जीवन में किसी न किसी समय यौन उत्पीड़न / हिंसा का सामना किया है।
(4) भारत में हर 17 मिनट में एक महिला के साथ बलात्कार की रिपोर्ट होती है।
(5) NCRB – के अनुसार

अपराध–4,48,211 लाख पति / रिश्तेदार द्वारा = 31.1%

वृद्धि–(0.7 से 3% तक) अपहरण / अगवा = 19.2%

गरिमा को ठेस = 18.7%<u>महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सशक्तीकरण के लिए प्रावधान</u>

संवैधानिक उपाय

(I) अनु. 14–लिंग के आधार पर भेदभाव पर रोक। (II) अनु. 15(3): राज्यों को महिलाओं एवं बच्चों के लिए विशेष उपबंध की अनुमति। (III) अनु. 16: लोक नियोजन में समान अवसर प्रदान करना। (IV) अनु. 39(d): समान कार्य हेतु समान वेतन (नर–नारी)। (v) अनु. 42: राज्य को कार्य की उचित एवं मानवीय दशाएँ सुनिश्चित करने और मातृत्व राहत के लिए उपबंध।

सरकारी पहल

(I) PMमुद्रा योजना (II) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (III) उज्ज्वला योजना (IV) महिला ई–हाट (v) महिला शक्ति केंद्र (VI) कामकाजी महिला छात्रावास (VII) PM आवास योजना (VIII) मातृत्व लाभ अधिनियम

(IX) छत्तीसगढ़ सरकार द्वाराः– "महतारी वंदन"(1000 रु./माह)

अंतर्राष्ट्रीय पहल (I) CEDAW–1979: महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव उन्मूलन पर अभिसमय। (II) SDGs: 2030 तक लैंगिक समानता प्राप्त करना एवं महिलाओं को सशक्त बनाना।

<u>नारी–शक्ति वर्तमान स्थिति</u> –

''स्वर लता दे रही है जिसमें, विष पीती मीरा बाई है। पद्मिनी कर जौहर वर्त का बलिदानी पन्नाधाई है। लक्ष्मीबाई, जीजाबाई है उद्धरण तरूणायी के। चढ़ सिंध शिखर बछेंद्री ने, काटे हैं कान जवानो के। कल्पना चावला सी बेटी, स्वर्णिम इतिहास रचाती है। बेटी कर्तव्य निभाने में इंदिरा अमर हो जाती है।।"

<u>ऑपरेशन सिंदूर की लीडिंग</u>–

(क) तकनीकी और रणनीतिक पहलुओं में – कर्नल सोफिया कुरैशी

(ख) ऑपरेशन की बारीकियों पर नियंत्रण – विंग कमांडर व्योमिका सिंह

(I) राजनीति में महिला शक्ति–

(क) इंदिरा गांधी – भारत की पहली महिला PM (1966–1977, 1980–1984)

(ख) प्रतिभा पाटिल – भारत की पहली महिला राष्ट्रपति (2007–2012)

(ग) द्रौपदी मुर्मू – भारत की पहली आदिवासी और वर्तमान राष्ट्रपति।

<u>नोट</u>–

लोकसभा में 14.4% एवं राज्यसभा में 13% महिलाओं की भागीदारी है तथा लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण प्रदान करने वाला 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' पारित हो गया।

(II) खेल में नारी शक्ति–

(क) ICC महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 – भारत प्रथम।

(ख) एम.सी. मैरी (बॉक्सिंग), पी.वी. सिंधु + सायना नेहवाल (बैडमिंटन), मिताली राज (क्रिकेट), पी.टी. उषा (एथलेटिक्स)।

(IV) शिक्षा एवं अन्य क्षेत्र–

(क) सावित्रीबाई फुले – भारत की पहली महिला शिक्षिका।

(ख) समाज सुधारक – फातिमा शेख, दुर्गाबाई देशमुख, महादेवी वर्मा आदि।

(ग) लोककला – तीजन बाई, सूरज बाई खांडे।

निष्कर्ष –

"नारी शक्ति" केवल दो शक्ति से संबंधित शब्द नहीं, अपितु राष्ट्र के समग्र विकास और समानता की आधारशिलाओं में है। जब नारी शिक्षित, आत्मनिर्भर और स्वतंत्र होकर निर्णय लेने में सक्षम होती है, तो परिवार से लेकर राष्ट्र तक प्रगति करता है। कोमलता के साथ–साथ दृढ निश्चयी, नारी ही वास्तव में समाज की धुरी और परिवर्तन की चिंगारी है।

"कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है।"

माँ



नाम– कुन्ती साहू
शिक्षा – एम.ए. हिन्दी (चतुर्थ)
महाविद्यालय–बी.सी.एस.शा.स्ना.महाविद्यालय धमतरी
मो.नं. – 9302975801

जो सूरज उगते ही उठ जाए, अपने कर्तव्यों के साथ,
उठते ही लग जाए निर्वहन में अपनी सेवाओं के साथ।
न अपने खाने की चिन्ता, न अपने स्वास्थ्य की फिक्र,
बस हार की खुशबू में घुल जाए,बनकर अपनों का जिक्र।
जो पूरा दिन जी लेती है, अपने परिवार के साथ,
दर्द छुपा लेती है ऑचल में, लाती नहीं लबों पर बात।
वो कोई और नही बल्कि, मेरी जिन्दगी है मेरी माँ है,
जिसकी हॅसी में बसती है, मेरे घर की रौनक शान है।
पूरे निस्वार्थ भाव से काम करती है, उस काम में खुशी ढूंढ़ लेती है।
न थकने का बहाना, न रूकने का नाम,
वो कोई और नहीं बल्कि, मेरी जिन्दगी है मेरी माँ है।
खाना बनाने से लेकर कपड़े बर्तन तक,
बाल बच्चे सबको संभाल, लेती है हर वक्त।
सास ससुर की सेवा के साथ, ताने भी सुन लेती है,
अपनों की खुशियों के कारण, एक वक्त भूखा भी रह लेती है।
पति के काम से आने पर, उसके चरण भी दबा लेती है,
अपना सुख भूलकर, सबका दुख बांट लेती है।
न कोई मांग न कोई शिकायत, बस ममता की गंगा बहाती है,
वो कोई और नहीं बल्कि मेरी जिन्दगी है, मेरी माँ है।
तेरी ममता के आगे फीका हर भगवान का रूप,
तेरे चरणों में ही मिलता है मुझको स्वर्ग का घूप।
कर्ज तेरा चुका न पाऊँ सात जनम भी लूँ अगर,
बस इतना आशीश देना माँ तू हर जनम रहे मेरे घर।

''युवा बेहतर भारत का भविष्य''



नाम – नियति साहू
कक्षा– बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
महाविद्यालय – कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कुरूद धमतरी (छ.ग.)
मो.न. –9238686511

शीर्षक – तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो

सपनो को रंग दो हौसलों की उड़ान से, तुम्हारी जयकार गूंज उठे आसमान में।।
अपने शब्दों में लम्हों की रवानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

हो जोश मन में आंखो में नई चमक, जिसमें दिखें बेहतर कल की झलक।।
नाज करें दुनिया वो जिंदगानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

माना जिंदगी में आते हैं कई मोड़, न हार हिम्मत न खुद को पीछे छोड़।।
परेशानी को मत कभी परेशानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

संघर्ष की बनाओ ऐसी ऊँची मीनार, हर चुनौती को दिल कर ले स्वीकार।।
तुच्छ न समझो खुद को खानदानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

तू न समझना खुद को जीरो, देख तेरे अंदर भी है एक सुपर हीरो।।
अपनी ताकत की अब चट्टानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

सत्य का दीप जलाओ जग हो प्रकाशवान, अपने कर्तव्य से बढ़ाओ देश का मान।।
सिंह पर आरूढ़ वीरता माँ भवानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

लक्ष्य को आकार दो अपने विचारों से, अपने सपने तोड़ लाओ चांद सितारो से।।
जिंदगी को खूबसूरत बागवानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

जीतने का मन में संकल्प तुम बनाओ, शासक बनो ऐसा दुनिया में नाम कमाओ।।
अपनी जवानी को अब जवानी लिखो, तुम युवा हो खुद अपनी कहानी लिखो।।

नारी शक्ति



नाम – सोनम साहू
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष
कॉलेज – पी.जी. कॉलेज
विषय –नारी पर
मो. नं. –6267964483
उम्र – 20

सत्य सनातन इस दुनिया की सतत पुजारी हूँ ,
हाँ मै नारी हूँ ।
वेदऋचायें लिखने वाली घोशा और अपाला हूँ ,
माता दुर्गा–काली, लक्ष्मी आदि सुन्दरी बाला हूँ।
विस्मिता हुआ देख जो अकबर वो चिगांरी हूँ ,
हाँ मै नारी हूँ, हाँ मै नारी हूँ ।
शकुन्तला ने भरत जना, भारत देश महान हुआ,
तारा ने जब ऑचल फाड़ा, द्रवित पूरा श्मशान हुआ।
जिद पर जब आ जाऊ तो यमराज पर भारी हूँ ,
हाँ मै नारी हूँ हाँ मै नारी हूँ ।
धर्म रक्षा हित मात कैकेयी सी हठधर्मी हूँ ,
पति विरह को हँसकर सहने वाली उर्मी हूँ।
14 वर्ष जो वन में बीता दे वह सुकुमारी हूँ,
हाँ मै नारी हूँ हाँ मै नारी हूँ।
तीनों लोक के स्वामी को राधा ने नाच–नचाया,
एक द्रौपती के अपमान ने महाभारत करवाया।
पति संग जो नेत्रहीन हुई वो गंधारी हूँ,
उंगली पर विश्व नचाती हूँ नर–नारायण पर भारी हूँ।
हाँ, मै नारी हूँ हाँ मै नारी हूँ।
यशोधरा ने गौतम जी को बुध्द बना डाला,
कालिदास जड़बुध्दि को प्रबुध्द बना डाला।
रामचरित तुलसी ने रच दी जब फटकारी हूँ ,
हॉ मैं नारी हूँ हॉ मैं नारी हूँ।
नारी होकर भी जो पुरूषोत्तम सी पहचान बनी,
इल्तुतमिश की बहादुर बिटिया सुल्तान बनी
बेगम हजरतमहल चेन्नम्मा मैं रजिया सुल्तान हूँ ,
दीपदान कर देने वाली पन्ना धाय महान हूँ।
दत्तक पुत्र बांध के करती घुड़सवारी हूँ ,
हाँ मै नारी हूँ हाँ मै नारी हूँ।

सभी क्षेत्र में आज बराबर का मेरा अधिकार है,
नारी नहीं किसी से कम माना ये संसार है।
बनकर मैरी कॉम चुनौती को स्वीकारी हूँ ,
हाँ मै नारी हूँ हाँ मै नारी हूँ।
जमीन से आसमाँ तक जिसने अपना रास्ता बनाया,
सपनों को पंख लगाकर अंतरिक्ष में उड़ान भरी।
कर्नल की गलियों से निकलकर जो सितारो में समाई,
कल्पना चावला भारत की गौरवशाली कहलायी
जगत–जननी, श्रद्धा, समर्पण, दर्पण हूँ ,
आक्रोश की चिंगारी हूँ,आदर की हितकारी हूँ ।
परिश्रम की पिटारी हूँ,प्रीत की फुलवारी हूँ ,
हाँ मै नारी हूँ हाँ मै नारी हूँ ।
याद करो उस नारी को जो लाई थी देश में आंधी,
बनी देश की महिला मुखिया इंदिरा गांधी।
इतिहास पटा तेरी महिमा से,
तुम अद्भूत गौरवशाली हो।
वाग्देवी महिषासुर मर्दीनी,
तुम आदिशक्ति अभिमानी हो।
आदि काल से वर्तमान तक,
विजय परचम की अधिकरी हूँ ।
हाँ मै नारी हूँ हाँ मै नारी हूँ।

''युवा बेहतर भारत का भविष्य''



नाम– गीतांजली नाग
कक्षा – बी.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर (विज्ञान)
मो.न. – 9201598175

" मैं सिर्फ एक छात्रा नहीं हूँ, बल्कि उस भारत का हिस्सा हूँ, जो कल को बेहतर बनाने की ताकत रखता है"

युवा.... यह शब्द सुनते ही एक अलग सी ऊर्जा महसूस होती है। लेकिन मेरे लिए युवा होना सिर्फ जोश और उत्साह तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जिम्मेदारी है – अपने सपनो के प्रति, अपने परिवार के प्रति और सबसे बढ़कर अपने देश के प्रति। आज का युवा ही कल का भारत है, और यही सोच मुझे हर दिन, कुछ बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है।

जब मैं अपने आसपास देखती हूँ तो मुझे कई तरह के युवा नजर आते हैं – कुछ सपनों के पीछे भाग रहे हैं, तो कुछ अभी भी अपने रास्ते की तलाश में हैं सच कहूँ तो कई बार मैं खुद भी उलझन में पड़ जाती हूँ, कभी असफलता का डर, कभी खुद पर संदेह ये सब मेरे मन में भी आते है लेकिन हर बार एक बात मुझे संभाल लेती है कि अगर मैं कोशिश करना नही छोडूँगी, तो एक दिन जरूर सफल हो जाऊंगी।

मुझे लगता है कि हर युवा के अंदर एक अलग पहचान छिपी होती है जरूरत है उसे पहचानने और उस पर विश्वास करने की। आज के समय में distractions बहुत है – सोशल मिडिया, तुलना और जल्दी सफलता पाने की चाहत। लेकिन सच्ची जीत उसी की होती हैं, जो धैर्य और मेहनत के साथ अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहें।

युवा सिर्फ अपने लिए नहीं जीते वे समाज एवं देश की दिशा भी तय करते हैं। अगर हम अपने छोटे–छोटे कामों को ईमानदारी से करे–जैसे पढ़ाई को गंभीरता से लेना, गलत चीजो से दूर रहना और दूसरो की मदद करना तो यही छोटे कदम एक बड़े बदलाव की शुरुआत बन सकते हैं। मुझे लगता हैं कि बदलाव कही बाहर से नही आता, वह हमसे ही शुरू होता है।

Yuva fest जैसे मंच में प्रतिभा दिखाने और अपनी सोच को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। मेरे लिए यह सिर्फ एक प्रतियोगिता नहीं है बल्कि अपने विचारों को लोगों तक पहुँचाने का एक मौका हैं यहाँ खड़े होकर मुझे यह एहसास होता है कि मेरी सोच भी मायने रखती हैं और मैं भी बदलाव का हिस्सा बन सकती हूँ।

अंत में, मैं दिल से यही कहना चाहूँगी.....

मैं एक युवा हूँ, और मुझे अपने सपनों पर विश्वास है। मैं गिरूँगी, सीखूँगी और फिर उठकर आगे बढ़ूँगी। और एक दिन, मेरे जैसे, लाखो युवाओ की मेहनत से भारत वैसा बनेगा, जैसा

''युवा बेहतर भारत का भविष्य''



नाम– रुपाली गंजीर
कक्षा – एम.एस.सी भौतिकी (द्वितीय सेमेस्टर)
कॉलेज– बी.सी.एस.शास.स्ना. महाविद्यालय धमतरी
मो.नं. – 94252 33887

"मुझे 100 ऊर्जावान युवा दो और मैं भारत की दशा और दिशा दोनों बदल दूँगा"
(स्वामी विवेकानंद)

किसी भी राष्ट्र का भविष्य, उसके युवाओं पर निर्भर करता है। आज का युवा केवल अपने सपनों को साकार करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उसकी ऊर्जा, नवीन सोच और परिवर्तन की क्षमता ही भारत को एक बेहतर और सशक्त राष्ट्र बनाने की दिशा में अग्रसर करती है।

युवा की परिभाषा– युवा मात्र 15–35 वर्ष की आयु का भारत की 65% आबादी नहीं, अपितु युवा मतवाले हाथी की तरह निरंकुश, तूफानी वर्षा की तरह प्रबल प्रचंड, संगीत की तरह मधुर, उज्ज्वल, प्रभात की शोभा, संध्या की बेला, चंद्रमा की शीतलता, जेठ की तपती दोपहरी का ताप और ज्वालामुखी–सी दहकती हुई आग होता है। यह युवा पीढ़ी केवल देश की जनसंख्या का हिस्सा नहीं, बल्कि राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी, ऊर्जा का पुंज और सुनहरे भविष्य का निर्माता है।

वर्तमान में युवाओं के सामने चुनौतियाँ –

वर्तमान में युवाओं के सामने निम्नलिखित चुनौतियाँ हैं :–

(1) भारत विश्व का सर्वाधिक युवा शक्ति वाला राष्ट्र है, जिसके पास जोश है, जुनून है, ताकत है, हिम्मत है, किन्तु विडम्बना इसकी कि आज इंजीनियरिंग या अन्य डिग्री लिया हुआ 20 में से केवल एक ही युवा सरकारी नौकरी के योग्य पाया जाता है।

(2) भारत में मानव संसाधन 60–65% है, जबकि युवा कुशल मानव संसाधन मात्र 15–20% है।

(3) 18 से 24 वर्ष की आयु के 50% से अधिक युवा खराब मानसिक स्वास्थ्य के शिकार हैं। भारत में युवाओं के आत्महत्या की दर इस प्रकार है – महिलाओं में 80% और पुरुषों में – 34%.

(4) भारत में नशाखोरी का % 15–24 वर्ष की आयु में करीब 15–20% युवा किसी न किसी रूप में नशे से प्रभावित पाए गए हैं।

वर्तमान में युवाओं की स्थिति–

प्रयाग के महाकुंभ 2025 में आकाश यादव नामक युवक ने नीम के दातून बेचकर महज 5 दिनों में 40 हजार रुपए कमाकर इस अनोखे बिज़नेस का सुझाव प्रस्तुत किया।

पंजाब के दिपेंद्र गोयल ने जोमेटो स्थापित कर पूरी दुनिया को दिखाया कि एक साधारण–सा विचार और तकनीक का सही इस्तेमाल किसी भी उद्योग की रूपरेखा बदल सकता है।

78 वर्ष पूर्व हम जिस अंग्रेजों के गुलाम थे, आज उनकी सत्ता भारत के युवा ऋषि सुनक के हाथों में है।

आई.सी.सी. वर्ल्ड कप 2025 में भारत की महिलाओं ने प्रथम स्थान प्राप्त कर खेल के क्षेत्र में भारत का डंका बजाया।

सरकारी पहल–

भारत सरकार के द्वारा युवाओं के लिए किए गए पहल निम्नानुसार हैं :–

केन्द्रीय बजट 2026 को युवाओं का बजट कहा गया है, जिसके तहत युवा कार्यालय एवं खेल मंत्रालय को 4,479.88 करोड़ का आबंटन कर (ए.आई.) स्टार्टअप, हरित ऊर्जा, खेलो इंडिया, सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 तथा अंत्योदय पर कार्य कर युवाओं का सर्वांगीण कार्य करेगी।

सरकार द्वारा शुरू किए गए योजना और उनके प्राथमिक उद्देश्य निम्नानुसार है :–

योजना का नाम		प्राथमिक उद्देश्य
(1) स्किल इंडिया मिशन	–	युवाओं को उद्योग–प्रासंगिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार योग्य बनाना।
(2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020	–	शिक्षा प्रणाली में लचीलापन और व्यावसायिक प्रशिक्षण को एकीकृत करना।
(3) स्टार्ट–अप इंडिया एवं स्टैंड–अप इंडिया	–	नवाचार और उद्यमिता के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना।
(4) अग्निपथ योजना	–	युवाओं को सशस्त्र बलों में सेवा करने और उपयोगी कौशल हासिल करने का अवसर देना।

निष्कर्ष :–

अंततः युवा किसी भी राष्ट्र के विकास और प्रगति के मुख्य आधार होते हैं। उनकी ऊर्जा, उत्साह और नवीन सोच ही देश को एक बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर करती है। निस्संदेह, सशक्त और जागरुक युवा ही एक बेहतर और समृद्ध भारत का निर्माण कर सकते हैं। इसलिए.....

"उठो, जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक मत रूको।"

नारी शक्ति



नाम–धात्री देवांगन
कक्षा – एम.एस.सी. (रसायन) द्वितीय सेमेस्टर
कॉलेज – बी.सी.एस.पी.जी. कॉलेज धमतरी
मो.नं. – 6266361860

नारी शक्ति मानव समाज की सबसे महान और प्रेरणादायक शक्तियों में से एक है। नारी केवल परिवार की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र निर्माण की महत्वपूर्ण आधारशिला भी है। नारी शक्ति से तात्पर्य महिलाओं को सशक्त, आत्मनिर्भर, आत्मविश्वास से भरपूर और निर्णय लेने में सक्षम बनाने से है। यह केवल महिलाओं के अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज, राजनीति, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्रों में उनकी समान भागीदारी और सम्मान को दर्शाता है। पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को मनाया जाता है।

कहा जाता है :–

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,
रमन्ते तत्र देवताः' ।

अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। कहने का तात्पर्य है कि हमारे देश में नारियों को देवी का स्वरूप माना गया है। माँ, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में वह जीवन को स्नेह, संस्कार और शक्ति प्रदान करती है।

नारी को शक्ति कहने का तात्पर्य केवल बल से नहीं; उनकी बुद्धिमत्ता, एकाग्रता, ध्यान, जिज्ञासा, उत्सुकता तथा काम के प्रति कर्मठ होने से है। युगों से देखा गया है कि नारी को शक्ति का स्वरूप माना जाता है। माँ दुर्गा, काली, सती आदि को शक्ति माना गया है। इन्हें केवल नाम से ही शक्ति नहीं कहा जाता, इन्होंने स्वयं को साबित किया है कि जब इनके आत्म–सम्मान को ठेस पहुंचती है, जब इनके परिवार पर आंच आती है तो वे शांत नारी से शक्ति का रूप धारण कर लेती हैं।

प्राचीन काल से ही महिलाओं ने अपने साहस और बुद्धिमत्ता से समाज को एक सही दिशा दी है। इतिहास में रानी लक्ष्मी बाई (झांसी की रानी), रानी दुर्गावती जैसी वीरांगनाएँ हैं, जो वीरता और देशभक्ति का अद्भुत उदाहरण हैं, जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध साहसपूर्वक युद्ध किया। हमारे देश में सावित्रीबाई फुले जो नारी शक्ति का एक अनोखा उदाहरण हैं, इन्होंने महिलाओं को शिक्षा दिलाई, कई कन्या विद्यालय खोले और महिलाओं को शिक्षित एवं आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। वे महिला शिक्षा की अग्रदूत हैं, आज उन्हीं के बदौलत हम सभी नारियों को पढ़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

नारी में धैर्य, प्रेम और त्याग जैसे गुण स्वाभाविक रूप से पाये जाते हैं। वह परिवार को एक सूत्र में बाँधकर रखती है और बच्चों को संस्कार देती है। एक शिक्षित महिला पूरे परिवार को शिक्षित बना देती है। इसलिए कहा जाता है कि यदि एक पुरुष शिक्षित होता है तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन यदि एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है।

नारियों को अवसर दो, वे कुछ कर दिखायेंगी!
नारियों को शिक्षित करो, वे आगे बढ़कर दिखायेंगी!
नारी शक्ति एक ऐसी शक्ति है जो आज क कभी हारी नहीं या यूँ कहें कि जिसे आज तक कोई हरा नहीं पाया। अगर नारी जिद में आ जाये तो वह कुछ भी कर सकती है। कहते है नारी को बहुत कोमल बनाया गया है, उनके हृदय में करूणा एवं प्रेम को अत्यधिक प्रचुर किया गया है, लेकिन वह एक ऐसी शक्ति है, जो ठान ले कि मुझे यह करके दिखाना है तो वह उसे करके ही दिखायेगी। वह अपने लक्ष्यों को हासिल करके ही रहती है। अगर उन्हें अपना सर्वस्व न्यौछावर करना आता है तो वे अपना हक लेना भी जानती हैं।
कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है!
तू जीवन की चिंगारी है, मौत भी तुझसे हारी है!
नारी को अत्यधिक सहनशील बनाया गया है, उन्हें मन एवं मस्तिष्क से अत्यधिक तंदुरुस्त तथा नियंत्रणपूर्ण बनाया गया है। नारियों को हमारे देश में देवी स्वरूप माना गया है, लेकिन क्या उनके साथ देवियों जैसा व्यवहार किया जाता है? आजकल देखा जाता है कि घरेलू हिंसा, अशिक्षा, दहेज–प्रथा, असुरक्षा, दुर्व्यवहार इत्यादि ऐसे अन्याय हैं जो नारियों के साथ होते हैं। आज भी कई घरों में बेटी का होना एक अभिशाप माना जाता है, किंतु आज की नारियां जागरूक हो रही हैं, वे स्वयं के लिए बोलना सीख रही हैं, अपने लिए लड़ रही हैं, अपना हक मांग रही हैं; जो उन्हें बहुत पहले करना था वे अब कर रही हैं। देर से ही सही लेकिन अच्छे कार्य की शुरुआत हो चुकी है! अब महिलाओं को Take it for granted नहीं लिया जाता, उन्हें केवल संजने–संवरने के लिए नहीं पूछा जाता, केवल उनकी सुंदरता को उनका गुण नहीं माना जाता। आज की नारी हर एक क्षेत्र में आगे है। चाहे उन्हें घर संभालना हो या देश संभालना हो वे पीछे नहीं हटती हैं। वह हर एक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है। हम अपने आस–पास अपने देश में यहाँ तक हमारे घरों में हम एक ऐसी नारी शक्ति देख रहे हैं जो अपने लिए जागरूक हो रही है, अपने अधिकार के लिए लड़ रही, अपने सपनों को जी रही, देश को ऊंचाइयों तक पहुँचा रही। नारी केवल नारी नहीं, उनके अंदर अटूट शक्तियाँ है जिसे कोई तोड़ नहीं सकता। ''नारी कोई अभिशाप नहीं, नारी एक वरदान है।
महिलाओं का मनोबल बढ़ाने के लिए हमारे समाज को जागरूक होना चाहिए। उन्हें समान अधिकार, सम्मान एवं अवसर मिलना चाहिए। बालिका शिक्षा को अवसर देना चाहिए और महिलाओं को आत्मरक्षा एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। सरकार ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएँ चलायी है जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है और समाज में उनकी स्थिति मजबूत हुई है। हम वर्तमान समय में देखें तो महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे हैं चाहे वह शिक्षा, खेल, राजनीति, विज्ञान, संस्कृति एवं कला हो! किसी क्षेत्र में वह पीछेनहीं रही। आजकल की नारियां आत्मविश्वास से परिपूर्ण हैं। वे अपने आपको दिन–प्रतिदिन बेहतर बनाने की कोशिश में लगी हैं। उन्होंने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर अपना अधिकार मांगना सीख लिया है। वे अपने काम से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर अपने माता–पिता एवं देश का नाम रोशन कर रही हैं। नारी शक्ति के कई उदाहरण हैं जो अलग–अलग क्षेत्रों में अपने कार्य से जानी जा रही हैं, उनमें से कुछ उदाहरण निम्न हैं :–
छ.ग. की नारी शक्ति
01. तीजन बाई – पंडवानी गायन की प्रसिद्ध कलाकार, जिन्हें पद्म–भूषण से सम्मानित किया गया है।

02. फूलबासन बाई यादव– एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता जिन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए माँ बम्लेश्वरी जनहित समिति की स्थापना की।

03. ममता चन्द्राकर – छ.ग. की प्रसिद्ध लोक–गायिका जिन्हें छ.ग. की कोकिला भी कहा जाता है।

04. नैना सिंह धाकड़ – बस्तर की प्रसिद्ध पर्वतारोही, जिन्होंने माउंट एवरेस्ट और माउंट ल्होत्से पर तिरंगा फहराया है।

05. अनुसुइया उइके – छ. ग. की पहली महिला राज्यपाल बनीं।

06. आकर्षी कश्यप – अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी।

07. बुधरी ताती – बस्तर में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता।

खेल जगत की नारी शक्ति

01. मैरी कॉम – विश्व प्रसिद्ध मुक्केबाज।

02. पी. वी. सिंधु – बैडमिंटन में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को गौरव दिलाया।

राजनीति के क्षेत्र में नारी शक्ति

01. इंदिरा गांधी – पहली महिला प्रधानमंत्री।

02. प्रतिभा पाटिल – पहली महिला राष्ट्रपति।

03. द्रौपदी मुर्मू – वर्तमान महिला राष्ट्रपति।

विज्ञान के क्षेत्र में –मंगलयान को MOM (Mars orbiter Mission) कहा गया। इसमें हमारे देश की नारी शक्ति का बहुत बड़ा योगदान है। इसमें रितु करिधाल (मिशन उप–संचालन निदेशक), मौमिता दत्ता, मिनल संपत आदि और भी कई महिलाओं ने इस मिशन को सफल बनाने में दिन–रात मेहनत की है।

कल्पना चावला – अंतरिक्ष में पहुँच कर भारत का नाम विश्व में रोशन किया।

अन्य क्षेत्रों में –

किरण बेदी – पहली भारतीय महिला आई.पी.एस. अधिकारी बनीं।

मदर टेरेसा –मानव सेवा और करुणा का श्रेष्ठ उदाहरण आज की सबसे बेहतरीन नारी शक्ति का उदाहरण है – ऑपरेशन सिंदूर का नेतृत्व कर रही महिलाएँ कर्नल सोफिया कुरैशी (भारतीय थल सेना), विंग कमांडर व्योमिका सिंह (भारतीय वायु सेना), लेफ्टिनेंट कमांडर प्रेरणा देवस्थली (भारतीय नौसेना) इन्होंने नारी शक्ति का परिचय देते हुए इस ऑपरेशन सिंदूर को सफल बनाया। कहते हैं आज की नारी सब पे भारी! इस उक्ति का यह अद्‌भुत उदाहरण था। हर नारी अपने आप में एक शक्ति है, वह स्वयं में ही परिपूर्ण है। प्रत्येक नारियों का एक अपना स्थान है चाहे वे एक गृहिणी हों या किसी पद में, सभी अपने आप में सुशोभनीय हैं।

नारी में है शक्ति अपार,
वही करेगी जग का उद्धार !!

महानदी का मन



नाम– नीरज कुमार साहू
शिक्षा – एम.एस.सी.(गणित) अंतिम वर्ष
कॉलेज – पं. सुंदरलाल शर्मा ओपन यूनिवर्सिटी, राजनांदगांव
मो.नं. – 8770434217

प्रस्तावना :–

मैने सदैव नदियों को जीवंत स्वरूप में देखा है, मानो जैसे कि वो एक मानव ही हो।

हिंदी व्याकरण में उपमा अलंकार का सृजन शायद नदियों के मूर्त स्वरूप में मानवीय जान फूंकने के उद्देश्य से किया गया हो।

नदियों की यात्रा एक मानव जीवन के समतुल्य प्रतीत होती है जहां उनका उद्गम किसी शिशु के जन्म के समान है, उनके प्रवाह के प्रतिरूप जहां कही वो शांत और शीतल है तो कही कौतूहल कर रही है, कही उफान पर है तो कही शुष्क और स्थिर है।

ये सारी अवस्थाएं मनुष्य के जीवन के उत्तार चढ़ाव को चरणबद्ध तरीके से प्रदर्शित करती है।

एक मुख्य कारण है जिस वजह से मुझे नदियों में मनुष्य दिखाई देता हैं और वो है अपने गंतव्य की, अपने लक्ष्य की चाह और उस पथ पर निरंतर अग्रसर रहना। जिस तरह नदियों का लक्ष्य समुद्र है उसी तरह हर मनुष्य का कोई न कोई एक लक्ष्य है, कोई धन वैभव ऐश्वर्य के लिए प्रोत्साहित है तो कोई पारिवारिक सुख शांति के लिए।

अंततः नदी और हम एक यात्रा में है और वो यात्रा है स्वयं की खोज ।

नदिया समुद्र में मिलकर स्वयं को पा लेती है और मनुष्य पंचतत्व में विलीन होकर ।

इस यात्रा के दौरान अनेक ठहराव आते है जिन्हें हम अपने मार्ग में बाधा समझते है, जिस प्रकार नदी के पथ में बांध का निर्माण होना निश्चित ही उसके लक्ष्य में रुकावट है, उसी प्रकार मनुष्य का उसके क्षमता अनुकूल कार्य न करना उसे रुकावट प्रतीत होता है। मगर ये रुकावट उसके अस्तित्व को सार्थक बनाती है, जहां वो विभिन्न तरीकों से मानव और समाज कल्याण में अपनी भूमिका निभाते हैं।

इन सब अधीर में एक नीर का मन क्या कहता है मैं नीरज कुमार साहू चंद पंक्तियों के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूं –

मैं नदी सा हूं, देखना चलते चलते समुद्र बन जाऊंगा
पर्वत, पहाड़ों, घाटी, दरारों को चीर कर , बढ़ते बढ़ते गंतव्य छू जाऊंगा।
शीतल से है इरादे पर, तीव्र मेरे प्रयास है ,महासागर सा विराट बनना, इस जल प्रवाह की आस है।
भले कनिष्ठ हो उद्गम मेरा, या सहायता को ढाल नहीं, सींच लिया हो जल प्रदेश ने, या हौले सी धार सही
मैं बूंद–बूंद बढ़ कर भी और करीब आ जाऊंगा ,
देखना एक दिन चलते चलते में समुद्र बन जाऊंगा।
मैं कभी गंगा सा पावन, कभी ब्रह्मपुत्र सा क्रोधित मैं, कभी नर्मदा सा पूज्यनीय, कभी यमुना सा शोषित
मै हौसलों के बाढ़ लेकर, हालातों के बांध तोड़कर ,अपने सपनों की राह बह जाऊंगा
देखना एक दिन चलते चलते मैं समुद्र बन जाऊंगा।।

''पीरा महतारी भाखा के''

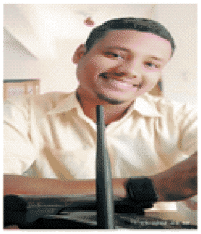

नाम–डुपेश कुमार (डुपु)
गाँव–मोतिमपुर (कुंडेल)
तह–मगरलोड,जिला–धमतरी छत्तीसगढ़
पढ़ाई–**ITI , PGDCA, B.A** फाइनल (पूर्व छात्र)
पंडित यशवंत राव कालेज मगरलोड
व्यवसाय– सहायक आपरेटर कातलबोड

भूले–बिसरे गाना असन,नंदा जाहूँ का!
मैं भाखा छत्तीसगढ़ी गँवा जाहूँ का?
संसो म परगे हंव,
का गोठ ल गोठियांव!
पर भाखा के राज चलत हे,
का मुख ल देखांव।
ये परदेशिया मनके बुध म भूला जाहूँ का!
मैं भाखा छत्तीसगढ़ी गँवा जाहूँ का ?
महतारी भाखा म गोठियाए बर
लाज सरम करथे,
गियान बताथे हिंदी म
अंगरेजी म दसकत करथें!
बाँधे बाहरी मुठीया, मैं छरिया जाहूँ का!
मैं भाखा छत्तीसगढ़ी गँवा जाहूँ का ?
भाखा बदलत, कुर्ता बदलत,
बदलत चाल ढाल
आठवीं अनुसूची के अगोरा म
बितगे कई साल।
चिन्हा मैं तोर गर के,गहना धरा जाहूँ का!
मैं भाखा छत्तीसगढ़ी नंदा जाहु का ?
छत्तीसगढ़ म छत्तीसगढ़ी भाखा के राज लाना हे,
जम्मो काज महतारी भाखा,
छत्तीसगढ़ी म गोठियाना हे।
बोरे बासी बटकी के बसिया जाहूँ का!
मैं भाखा छत्तीसगढ़ी नंदा जाहूँ का?

''छत्तीसगढ़ी लोक कला''



नाम – अमृतांशु निराला
कक्षा – एम.ए. हिन्दी चतर्थ सेमेस्टर
कॉलेज – सुखराम नागे महाविद्यालय नगरी
विषय –छत्तीसगढ़ी लोक कला
मो. नं. –9685607543

पहली जोहार करंव छत्तीसगढ़ महतारी के पइयांला,
दूसर जोहार गुरुजी, मेडम, दीदी अउ भइयाला,
मोर छत्तीसगढ़ जे मे भराए हे लोक कला के मन,
जेला जाने इंहा के लइका–पिचका अउ जन मन,
हरेली में धान हर सुग्घर लहराए है,
सावन में पोरा के ठेठरी ममहाय हे,
नदिया के तीर म सब रीलो–रीलो गुनगुनाए है,
अउ रउत देवारी मा घर–घर जाके चिल्लाए है।
सुवा के बोल मा गुरतुर हे बोली.
फागुन के रंग गा रंगे हे टोली,
करमा के ताल बाजे होते जोरा–जोरी,
हाना के मा होवे सब्बो हांसी–ठिठोली,
पंथी के नाचा मा सत् के बरत हे ज्योतिः
महुआ के मात मा सब नाचे ऐती–ओती.
मुडी मा पहिने पागा अउ कनिहा मा धोती,
ए लोक कला हरे मोर छत्तीसगढ़ के मोती

''युवा बेहतर भारत का भविष्य''



नाम– संगीता साहू
कक्षा – बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर (बायो)
महाविद्यालय– बी.सी.एस. कालेज धमतरी
मो. नं. – 7898289769

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वर्तमान में युवा हर क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त कर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

युवा ही है जो प्रगति के पथ पर राष्ट्र को ले जाने वाला है

भारत के युवा एक गतिशील शक्ति है, जो देश के शासन को बदल रहें है। उनकी ऊर्जा, विचार और और नवाचार भारत को एक उज्जवल और अधिक न्यायपूर्ण भविष्य की ओर ले जाने के लिए आवश्यक है। भारत का भविष्य उनके हाथों में हैं। आज भारत दुनिया के सबसे युवा देश में से एक है 140 से ज्यादा लोग करोड़ की आबादी में 65% से ज्यादा लोग 35 साल से कम उम्र के हैं। यह सिर्फ आँकड़ा नहीं, बल्कि एक शक्ति है। वही शक्ति जो बेहतर भारत का भविष्य लिखेगी।

युवा भारत की नई पहचान

"युवा शक्ति, देश की भक्ति – यही है भारत की असली शक्ति "

युवा जोश, जुनून और ज़ज्बा का नाम

युवा मन न रूकता है, न थकता है। कलाम साहब ने कहा था– सपने वो नहीं जो नींद में आएं सपने वो हैं जो सोने न दें।

आज का युरा ISRO में रॉकेट बना रहा रहा है, स्टार्टअप से दुनिया बदल रहा है, और ओलंपिक में तिरंगा लहरा रहा है। चाहे वो UPI बनाने वाले इंजिनियर हो या सीमा पर खड़े जवान – हर युवा देश की शान है।

"नई सोच, नया जोश– युवा बनाएंगे भारत का कोश"

आज के युवाओं का मार्ग चुनौतियों से कम नहीं है। बेरोजगारी, कौशल विकास की कमी और, भटकाव जैसी बाधाएँ युवाओं के सामने खड़ी है। लेकिन मेरा युवा भारत जैसे पोर्टल और नई शिक्षा नीति के माध्यम से इन चुनौतियों को अवसरों में बदलता जा रहा है। युवाओं को अब केवल डिग्री ही नहीं, बल्कि हुनर (Skill) की आवश्यकता है, ताकि वे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा कर सके।

युवा वो दीपक है जो अंधेरे में भी रौशनी बनते हैं, और भारत वो आँगन है जिसे इन दीपकों से ही उजाला मिलता है।

युवाओं की असिमित ऊर्जा और उत्साह ही किसी राष्ट्र की असली संपत्ति होती है।

चंद्रयान से लेकर ओलंपिक तक जब देश का नाम आता है तो दुनिया सलाम करती है। वो नाम रोशन करने वाले युवा ही है। zerodha का निखिल कामथ हो या Gukesh D जैसे वर्ल्ड, चेस चौंपियन, युवा ही भारत को ग्लोबल बना रहे हैं।

आज का युवा डरता नहीं है। तभी तो UPI से लेकर चंद्रयान तक, हर जगह भारत का डंका बजा रहा है। कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं, जीता वहीं जो हारा नहीं ये सिर्फ लाईन नहीं, 65% युवा आबादी का जज्बा है।

UN रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक दुनिया का हर 5 वाँ कामकाजी इंसान भारतीय युवा होगा। हर देश

का भविष्य उसके युवाओं पर निर्भर करता है। जिस तरह मजबूत नींव पर एक इमारत टिकती है, उसी तरह देश की नींव युवा पीढ़ी होती है। यदि युवा पढ़े–लिखे, मेहनती और ईमानदार हों, तो देश तेजी से तरक्की करता है।

"युवा उठ! तू कदम बढ़ा, बेहतर भारत तुझे बुला रहा"

आज के युवा सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं हैं, वे तकनीक, विज्ञान, खेल, कला और समाज सेवा में भी आगे हैं। उनके पास नई सोच ऊर्जा और उत्साह है।
"कलम हो हथियार, शिक्षा हो अस्त्र, युवा ही है भारत का भाग्य–सूत्र।"
अगर इस ऊर्जा को सही दिशा दी जाए, तो भारत एक महाशक्ति बन सकता है।
युवा वह बीज हैं जिसमें एक विशाल और छायादार भारत का वृक्ष छिपा है। यदि युवाओं को सही दिशा, शिक्षा और अवसर दिए जाएं, तो भारत को दुनिया की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने से कोई नहीं रोक सकता ।
आज भी अगर युवा मेहनत, ईमानदारी और अनुशासन को अपनाएं तो भारत विश्व गुरु बन सकता है।
युवा पीढ़ी देश की रीढ़ है। यदि बह शिक्षित संस्कारी, परिश्रमी और देशभक्त होगा तो राष्ट्र का भविष्य उज्जवल होगा। इसलिए आवश्यक है कि हर युवा अपने कर्तव्यों को समझे और अपने जीवन को राष्ट्रहित में लगाए ।

"युवा शक्ति ही राष्ट्र की सच्ची शक्ति है"

नारी शक्ति



नाम – कशिश पाल
पिता – श्री निराम पाल
कॉलेज – उद्यानिकी महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कुरुद (धमतरी)
पता – करेलीबड़ी, मगरलोड
मो. नं. – 9244070058

खुद को जानो नारी, तुम खुद को पहचानो।
तुझमे सारी कलायें है,तुझमें है सारी खूबी।
अनेकों रूप है तेरे,अनेक पहचान।
कभी माँ उभी बहन कभी प्रियतम,
हर भावनाओ की बन जाती हो मिशाल।
हर दम विनम्र रहना भी सही नही,
सही नहीं गलत के प्रति सहना ।
जानो अपनी कलाओं को,
पहचानो अपनी भावनाओ को।
चुनो वो हर शब्द जो सही लगे,
चुनी वो सारी खूबी जो तुम्हे अपनी लगे।
समझो अपनी कलाओ को पहचानो अपनी भावनाओं को,
अपनाओ वो सारी चीजें जो तुम्हे खुशी दे अगर कोई बांधे संस्कार के बन्धन में
हरदम विनम्र रहना भी सही नही,सही नहीं गलत के प्रति सहना।
तुम खुद को जानो नारी ,खुद को पहचानो।

धमतरी जिला की सांस्कृतिक विरासत

नाम – गीता साहू
पिता – स्व. गोपाल साहू
कक्षा – एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर
पता – महिमा सागर वार्ड धमतरी
कॉलेज – नारायण राव मेघावाले कन्या महाविद्यालय धमतरी (छ.ग.)

सांस्कृतिक विरासत :–
धमतरी जिला छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। यहां की संस्कृति–प्रकृति, परम्परा, लोक जीवन त्यौहार, नृत्य, संगीत कला, एवं शिल्प का अदभूत संगम है। यहां के लोग सरल, मेहनती एवं संस्कारवान हैं, जो अपनी परंपराओं और रीति–रिवाजों को आज भी बड़े ही गर्व के साथ निभाते हैं।

जनजातीय संस्कृति और जीवनशैली :–
बात करते हैं, धमतरी जिले की जहाँ सुबह की शुरुआत पक्षियों की मधुर आवाज से होती है। और जीवन बहता है नदियों की शांत धारा के साथ, धरती को माँ मानकर जीते है, हर पेड़ में देवता देखते हैं, हर हवा के झोंके और नदियों में आाशीर्वाद महसूस करते है।
उनकी वेशभूषा में चमक नहीं, पर एक अपनापन है, चांदी के गहनों की खनक में सदियों पुरानी पहचान है खेतों में मेहनत करते हाथ, धान की बालियों के संग सपने बोते है।
धमतरी की यह जनजाति, दूनियाँ हमें दिखाती है। कम में भी संतोष कैसे पाया जाये, और प्रकृति के साथ मिलकर, जीवन को अच्छे व सच्चे अर्थों में कैसे जीया जाये।

लोक नृत्य और लोक संगीत :–
धमतरी की धरती पर, जब ढोल–मांदर की गूंज उठती है,
तो लगता है जैसे जंगल, नदी, पहाड़ सब मिलकर गुनगुनाते है।
करमा के घेरे में खुशी के कदम, हरियाली को धन्यवाद कहते है,
हाथों में हाथ व दिलों में लय, प्रकृति संग रिश्ते बुनते है।
सुआ गीतों की मधुर तान में, महिलाओं की हँसी खिल जाती है,
दीपों की रोशनी के संग, हर भावना हर खुशी गीत बन जाती है।
पंथी नृत्य में भक्ति की धारा, गुरु घासीदास का संदेश समाया,
हर एक भाव, हर एक कदम में आस्था ने दीप जलाया हर एक त्यौहार ने खुशियाँ लाया,
यह नृत्य गीत सिर्फ एक कला नहीं, यह जीवन की पहचान है,
'हर खुशी हर पर्व में बसते है, यही धमतरी की शान है।

त्यौहार और मेले :–
धमतरी की धरती पर, जब त्यौहारों की रौनक छा जाती है,
हर गली, हर आँगन में, खुशियों की महक फैल जाती है।
हरेली के हरियाली के संग, किसान अपने औजारों को सजाते,
गेड़ी चढ़े बच्चे हँसते–गाते खुशियों के रंग लुटाते है।
पोला में सजे–धजे बैल, मानों परिवारों के सदस्य बन जाते है
तीजा के झूलों में झूलती हँसी, महिलाओं को खुशियाँ के जाते हैं।
छेरछेरा की पुकार में, मिल–बाँटने का भाव समाया घर–घर से अनाज निकालकर सबने खुशियों को अपनाया,
बच्चों को खुश देखकर बड़े भी बच्चे बन जाते हैं।
सिहावा के मेलों में आस्था का सागर लहराता है,
नृत्य, गीत, संगीत और रंग–बिरंगे बाजार हर मन को मोह जाता है।

ये त्यौहार सिर्फ रस्में नहीं, जीवन का उत्सव बन जाते हैं,
धमतरी की संस्कृति में बसकर, हर दिल को जोड़ जाते हैं।
धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल :–
धमतरी की पावन धरती पर आस्था और, इतिहास एक साथ चलते है,
हर पत्थर, हर राह, हर जगह, बीते, युगों के किस्से मिलते हैं।
सिहावा के शांत पहाड़ों में, महानदी की शुरुआत होती है,
ऋषियों की तपोभूमि मानी जाती है, जहाँ हर हवा में एक प्रार्थना होती है।
अंगारमोती मंदिर की ज्योति में श्रद्धा का दीप जलता है।
दूर–दूर से भक्त आते हैं, मन में विश्वास लिए आते हैं।
गंगरेल डेम का विस्तृत जल, आसमान को छूता दिखता है,
शांत लहरों के साथ प्रकृति की सुंदरता दिखती है।
रुद्री बैराज के किनारे बहती है समय की कुछ कहानी,
जहाँ इतिहास और वर्तमान मिलकर रचते है एक नई निशानी। ये सिर्फ जगह नहीं धमतरी की पहचान है। आस्था, प्रकृति और इतिहास के अनमोल वरदान है।
हस्त शिल्प और कला :–
धमतरी की मिट्टी में बसती है, कला की एक प्यारी पहचान
हाथों की मेहनत से जन्म लेती है, हर शिल्प में झलकती अरमान।
मिट्टी के घड़े और दिये में, धरती खुशबू बन जाती है।
गोदना की रेखाओं में भी, संस्कृति की गहराई होती है,
पेड़–पौधे पक्षी, देवताओं के रूप, हर घर को मंदिर बनाते है।
यो सिर्फ सजावट नहीं, जीवन का एक हिस्सा है,
धमतरी की इस धरोहर में हर दिल का एक किस्सा है।
खान–पान (स्थानीय व्यंजन) :–
धमतरी की रसोई में, सादगी का स्वाद बसता है,
मिट्टी की खुशबू के साथ, हर व्यंजन दिल को छूता है,
भात की गरम थाली, दाल और हरी भाजी,
फरा की नरम सी खुशबू चीला का हल्का सा स्वाद,
अंगाकर रोटी की आंच में घर का अपनापन दिखता है
ठेठरी–खुर्मी की मिठास में, छुपा है त्यौहारों का उल्लास
जंगल के फल–महुआ, की मिठास, प्रकृति का उपहार बंन जाते है।
प्रकृति से जुड़ी जीवन शैली :–
धमतरी की धरती पर, प्रकृति संग जीवन बहता है,
जंगल, नदी, पहाड़ो, में हर दिन नया दिखता है।
पेड़ो में देवता, नदियों में माँ,खेतों में
मेहनत करते लोग,मिट्टी के घर, सादा जीवन !!
कम में भी संतोष, साथ में खुशियाँ, यही है यहाँ का असली खेल !!

''छत्तीसगढ़ी लोक कला''



नाम – अंजली सिन्हा
कक्षा – एम.ए. इतिहास चतुर्थ सेमेस्टर
महाविद्यालय–बी.सी.एस.शा. स्ना. महाविद्यालय धमतरी
विषय – छत्तीसगढ़ी लोक कला
मो. नं. – 9301012322

मोर छत्तीसगढ़ के माटी महकय,गाँव –गांव मं गूंजय गीत।
लोककला के रंग म रंगे,हर मनखे के दिल अउ प्रीत।
नाच गम्मत के संग–संग म, गांव के हर कोना हँस जाथे।
पंडवानी के गाथा गूंजय,महाभारत के कथा सुनाय।
तीजन बाई जइसन कलाकार,अपन कला ले दुनिया भाय।
सुआ नाच म बहिनी मन,घेर के गीत सुनाथे प्यारा।
रंग बिरंगा लुगरा पहिन के, नाचय जईसे फुलवारी सारा।
करमा नाम के गजब के मया,हाथ पकड़ के सब नाचथे।
मन मं उमंग के फूल फूलथे,बस्तर के कला ह अतभूत।
टोकरा मं झलकय पहचान,धातु ले गढ़े सुन्दर मूरत।
कारीगर के बढ़े मान,माटी के बनथे खिलौना।
लकड़ी अऊ बांस के काम निराला,इही आय हमर लोककला।
दीवार मं चित्र बनाय जाथे, फूल पत्ती अऊ जानवर के।
घर आंगन हा लगथे सुहाना, रंग भरे जिनगी के डगर के।
हरेली पोला तीज त्यौहार , हर दिन मं उत्सव के बात।
गीत–नृत्य ले सजथे जिंदगी,हर कोनो मन होथे खुशहाल।
नदी जंगल अऊ पहाड़ के,छाया मं पलथे ये कला।
धरती दाई के मया झलकय,हर रंग मं बसथे उजाला।
आज घलो जिंदा हे परम्परा,नवा पीढ़ी ला देथे सीख।
अपन जड़ ला कभू न भूला,संस्कृति संग बदलत प्रीत।
मोर छत्तीसगढ़ के लोककला,सादा पर गहिरा पहिचान।
भारत घर मं चमक बिखेरे,बढ़ावय हमर देश के मान।
ये सिरिफ कला नइ ये,जिनगी के आधार बने।
हम सबके ये जिम्मेदारी,इला सहेज के आगू बढ़े।

नारी शक्ति

नाम– कल्याणी साहू
मो.नं. – 8349710600
कक्षा – पी.जी.डी.सी.ए
शासकीय सुखराम नागे महाविद्यालय नगरी

नारी शक्ति संघर्ष से शिखर तक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः यह उक्ति केवल शब्द नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। नारी सृजन की शक्ति है, सहनशीलता की मूर्ति है और परिवर्तन की आधारशिला है। इतिहास से लेकर वर्तमान तक, नारी ने हर क्षेत्र में अपने साहस, त्याग और आत्मबल से समाज को नई दिशा दी है।

नारी शक्ति का अर्थ केवल शारीरिक बल नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता, आत्मविश्वास और कठिन परिस्थितियों में भी हार न मानने का जज्बा है। एक माँ के रूप में वह अपने बच्चों को संस्कार देती है, एक बेटी के रूप में परिवार की उम्मीद बनती है और एक पत्नी के रूप में जीवन की हर चुनौती में साथ निभाती है। लेकिन इन भूमिकाओं के अलावा, आज की नारी हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है – चाहे वह शिक्षा हो, विज्ञान, खेल, राजनीति या व्यवसाय।

अगर हम इतिहास पर नज़र डालें, तो हमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएँ मिलती हैं, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अपने साहस का परिचय दिया। वहीं आधुनिक युग में कल्पना चावला, पी. वी. सिंधु और किरण बेदी जैसी महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है। यह सभी उदाहरण नारी शक्ति के जीवंत प्रमाण हैं फिर भी समाज में कई बार नारी को कमज़ोर समझा जाता है और उसे कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, शिक्षा से वंचित रखना जैसी समस्याएँ आज भी कहीं न कहीं मौजूद हैं। लेकिन अब समय बदल रहा है। आज की नारी जागरूक है, अपने अधिकारों को जानती है और अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने से नहीं डरती है। वह अपनी पहचान खुद बना रही है और समाज को भी प्रेरित कर रही है।

नारी शक्ति का सबसे बड़ा उदाहरण उसकी सहनशीलता और धैर्यशीलता है। वह हर कठिनाई को मुस्कुराकर सह लेती है और अपने परिवार और समाज के लिए निरंतर कार्य करती रहती है। आज कल महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं, तब देश भी तेजी से प्रगति कर रहा है। बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान इसी सोच को आगे बढ़ाते हैं कि नारी का सशक्तिकरण ही देश के उज्ज्वल भविष्य की कुंजी है।नारी केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक शक्ति है – एक ऐसी शक्ति जो जीवन को जन्म देती है, उसे संवारती है और उसे ऊंचाइयों तक पहुँचाती है। हमें नारी का सम्मान करना चाहिए, उसे बराबरी का अधिकार देना चाहिए और उसके सपनों की उड़ान भरने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

माँ



नारी शक्ति
नाम – लिलेश
मो. नं. – 6260994018

नौ महीने कोख मे रखकर, मुझको तुने बनाया ।
माँ तुमने ये दुख दर्द सहकर, इस दुनिया मुझे लाया।
दुनिया की पहली शिक्षा में, संस्कार मुझे सिखाया ,
इसलिए पूरी दुनिया को अपना भगवान तुम्हे बताया।

भगवान की तलाश में कई, धामों की करते है लोग यात्राएँ,
एक बात सच कह गई है. कई शास्त्रों में।
भगवान से भी ऊँचा, तेरा स्थान बताया है ,
मातृ देवो भवः की वाणी. वेदो ने भी गायी है ।
जिसने जन्म हमें दिया है, वही ईश्वर की परछाई है,

भगवान का रूप माँ या, भगवान का छाया है।
माँ का प्यार सच्चा, बाकी सब माया है,
माँ तुम्हारे कदमो में सारी जन्नत है।
खुश नसीब हूँ मै माँ जो, तुझे भगवान के रूप मे पाया है।

इस जमीन पर उसने, जन्नत को उतारा है
उसकी तस्वीर को मैंने, अपने दिल पर संवारा है
क्यों भड़कता है तू दर–दर, इबादत की तलाश में
तेरे घर के आंगन में ही, रब का नजारा है।

उसकी मुस्कान से मेरे दिल, की बाग का फूल खिल जाता है
मैं सोच कुछ मांगने को, उससे पहले ही मिल जाता है
और कितने भी गहरी चोट या जख्म हो दिल में
उनकी दुआओं से भी, यूं ही सब सिल जाता है।

कई लोग दुखा जाते हैं दिल, मां का कुछ यूं ही बातों से
अपने ख्वाबों को पूरा करने, के लिए भी सता जाते हैं
तुझे तकलीफ में देखकर, कई रातों को नहीं सोती
और मां की कीमत उनसे पूछो जिनकी मां नहीं होती।

बस्तर

नाम – रिजवान रिजवी
शिक्षा – बी.एस.सी. बॉयोटेक्नोलॉजी
विषय – बस्तर
मो. नं. – 8982621443

वो तुम्हे समाहित कर लेगा,
जैसे उसने समाया है अपने अंदर।
अगाध प्रेम, असहनीय दर्द, अनगिनत रहस्य,
रहस्य ऐसे जो रोमांचित करते है।
घाट वे मोड़ की चुनौतियो को पार करने का रोमांच,
जो बताता है हर चुनौति के बाद साज और खुला आसमान है।
जो तुम्हारा है, तुम चाहो तो रंग लो इस आसमान को,
नीला, हरा, सफेद, काला, केसरिया भी रंगो,
रंग भी सकते हो लाल।
संभावनाओ की फेहरिरूत खोल देता है, साथ और सादा कैनवास।
लकीरे खींचने, खुदरंग, बदरंग, जैसी भी तस्वीर तुम उकेरना चाहते हो उकेर सकते हो।
वो जो श्रृखलाएं तुम्हारे सामने खड़ी है वो पहाड़ियाँ चाहते, अस्तित्व है पुरखों का,
वो बताती खड़े रहना, लड़ना अपने अस्तित्व के लिए, नहीं तो बैलाडीला हो सकते हो।
वो अनुभति करते है 'रूपेंसर' के नियम में वो जातक है स्वाभिमान का
बस्तर बहुत कुछ है, हर स्तर से ऊंचा।

नारी शक्ति



नाम – वैशाली प्रजापति
कक्षा – एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर (भुगोल)
मो.न. –7354137280
कॉलेज –बी.सी.एस. पी.जी. कॉलेज धमतरी

''नारी तू खुद को पहचान''
नारी तू सिर्फ कहानी नही, हर युग की नई निशानी रही ,
मातृ भूमि के लिए विरांगना बन लड़ पड़ी,
पर आज इन हैवानों से क्यो डर भाग रही,
राष्ट्र को जैसे कराया आजाद, अब अपने अन्दर के साहस को पहचान,
नारी तू खुद को पहचान तुझसे है पूरे जग का ज्ञान।।
नन्हे बालक को आरंभ से अंत का शिक्षा देती
पर आज विडम्बनाओं के कारण खुद वंचित रहती
जैसे दिखाया अज्ञानियों को सत्य का मार्ग
अब तू अपने अन्दर के हुनर को पहचान
नारी तू खुद को पहचान तुझसे है पूरे जग का ज्ञान।
जहाँ नारी की होती लक्ष्मी से पहचान वही हो रही आज जलाकर राख
जाग तू सह मत, अग्नि सी प्रचंड तू, मौन त्याग
अब तू अपने शक्ति स्वरूप को पहचान,
नारी तू खुद को पहचान तुझसे है पूरे जग का ज्ञान।।
कौन कहता नारी बेचारी है, इसलिए की यह धरती सी सहनशील है,
नारी सिर्फ एक नाम नहीं, जग जननी, सब पर भारी है,
दुर्गा, काली, अहिल्या, अम्बिका के शौर्य सा है पहचान.
नारी से होती पूरे कुल का मान,
नारी तू खुद को पहचान तुझसे है पूरे जग का ज्ञान।।
मत समझो कमजोर खुद को, तुम वक्त आने पर आग बन जाओगी
तुम्हारी कहानी नही आसान हर बार हारकर भी नई जीत की हैपहचान
नारी तू खुद को पहचान। तुझसे है पूरे जग का जान।

धमतरी में विकास का बढ़ता सोपान'



नाम– कुनाल हिरवानी
पिता– श्री कष्णा हिरवानी
कक्षा– बी.एस.सी. चतर्थ सेमेस्टर (बायो.)
महाविद्यालय–बी.सी.एस.शा. स्ना. महाविद्यालय धमतरी
मो. नं.– 9098414086

तीन नदियों की गोद में बसा मेरा धमतरी,
अब विकास के पथ पर चल पड़ा है गर्व से भरी
कल तक जो जाना जाता था धान के कटोरे से,
आज चमक रहा नए सपनों के उजालों से।
गंगरेल के तट पर सजे जल–जगार महोत्सव का मान,
जहाँ जल ही देवता, जल ही जीवन का गान।
नौका दौड़ में लहरों–लहरों से होड़ लगाते वीर,
ढोल–नगाड़ों की गूंज से काँपे गंगरेल का नीर।
जल संरक्षण का संदेश देता ये महोत्सव प्यारा,
नई पीढ़ी को सिखलाए पानी का मोल दुबारा ।
पर्यटन का ताज बना, रोजगार की खुली राह,
धमतरी की माटी का गौरव, गंगरेल की वाह।
कलेक्टर साहब ने कॉलेजों में करवाया युवा फेस्ट महान,
मंच सजा भाषण संस्कृति से, युवा जोश का उठा तूफान ।
नाटक, गीत–संगीत की बही बहार, रंगीली चित्रकला में दिखा हुनर अपार।
खेल–कूद का भी हुआ भव्य आयोजन,
कबड्डी की दहाड़, वो खो–खो में लगे जतन ।
रेस में दौडे हमारे युवा महान , दौड में पसीना बहा,
सड़को का जाल बिछा चौड़ा और महान,
रायपुर – जगदलपुर जोडे, विकास का निशान।
फोरलेन की रफ्तार से जुडते गाँव – शहर,
किसानों की उपज पहुंचे मंडी तक हर पहर।
शिक्षा की अलख जगी, खुले नए विद्यालय,
कॉलेज आईटीआई से संवरते कल का आलय।
अस्पतालों में सुविधा, डिजिटल उपचार,
हर जीवन को मिल रहा अब बेहतर आधार।
'एक जिला एक उत्पाद से शिल्प को मिली पहचान,
महिला समूह आगे बढ़े, स्वरोजगार की शान।'
पुराना गौरव साथ लिए, नया सवेरा लाए,
धमतरी का हर सोपन प्रगति गीत गाए ।

माँ



नाम– धनुष्का राजश्मि ध्रुव
पिता – श्री राजेन्द्र ध्रुव
कक्षा – बी.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर
कॉलेज – साइंस कॉलेज रायपुर
मो. नं. – 9770035188

माँ तू मेरे जीवन मे सबसे अहम किरदार निभाती है,
मेरे जागने से पहले जागना, मेरे सोने के बाद सोना ,
मेरे दिन भर की गतिविधियों मे तेरा साथ होना ,
मै सब जानती हूँ, और सब समझती हूँ,
पर कभी कह नहीं पाती,
आज सच कहूँ तो,
तू मेरे पेशेवर जीवन को शशक्त और
निजी जीवन को गैर–जिम्मेदार बनाती है,
मेरी हर छोटी जरूरतों को तू अपनी जिम्मेदारी समझ कर निभाती है,
हाँ माँ तू मेरे जीवन मे सबसे अहम किरदार निभाती है,
मेरे गम मे होने की सबसे पहले भनक तुझे ही पढ़ती है,
उस वक्त मेरे आँसू के लिए तेरे आँचल का रुमाल बन जाना,
तेरे लफ्ज़ो के हर शब्द का मेरे लिए प्रोत्साहन बन जाना,
तेरा मुझे समझना और समझाना,
मेरी गर्दन की गाँठ खोल जाना,
ये सारी भावनाएं मुझे तेरी ममता का अर्थ समझाती है ,
हाँ माँ तू मेरे जीवन मे सबसे अहम किरदार निभाती है,
अब तक कई गलतियाँ हुई मुझसे मैने खुद को तुझसे नाराज़ किया,
मेरे जीवन मे तेरा समय कहीं और फिजूल बर्बाद किया,
माँ कैसे तू मेरी हर गलतियों को झटपट नज़र अंदाज़ कर जाती है,
हाँ माँ तू मेरे जीवन मे सबसे अहम किरदार निभाती है।

''जल है तो कल है''



नाम – चैतन्य प्रसाद
पिता – गंगाधर
स्कूल – शासकीय हाई स्कूल जोरातराई
कक्षा – दसवीं
मो.नं. – 6261349216

रूपरेखा

01. प्रस्तावना
02. जल का महत्व
03. जल संकट के कारण
04. जल संरक्षण के उपाय
05. उपसंहार

''जल ही है हम सब की जान, इसलिए इसका करो सम्मान।।

01.प्रस्तावना :–जल है तो कल है'' यह केवल एक नारा ही नहीं अपितु यह हमारे जीवन का प्राकृतिक सत्य है। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व जल पर ही निर्भर करता है। यदि जल नहीं होगा तो हम जीवित ही नहीं बचेंगे। पृथ्वी पर रहने वाले जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़ें, सभी के लिए जल अत्यंत आवश्यक है। हमारे शरीर का 70 प्रतिशत हिस्सा भी जल से ही बना है। अतः कहा जा सकता है कि जल यदि पृथ्वी से समाप्त हो जाये तो इसका अर्थ यह हो जायेगा की पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जायेगा। क्योंकि कोई भी व्यक्ति बिना खाना खाये कुछ दिनों तक जीवित रह सकता है, परन्तु बिना जल पिये कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता यदि कोई व्यक्ति को जल समय पर नहीं मिल पाये उस व्यक्ति को चक्कर आने जैसी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है।

02.जल का महत्व – जल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। दैनिक जीवन में सुबह सो कर उठने से लेकर देर रात तक सोते तक भी हम जल का अनेक प्रकार से उपयोग करते है। नहाने, खाना बनाने, पीने पशुओं को पिलाना, अन्न उत्पादन (फसल) संबंधित हेतु भी हम जल का प्रयोग करते है। प्राचीन काल से भी बहुत ही प्रचलित यह कथन –''जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः

इस कथन का अर्थ यह है कि जल के एक–एक बूंदे से ही घड़ा भरता है। यह हमें कड़ी मेहनत व निरंतर अपने कार्य में लगे रहने की शिक्षा देती है। साथ ही बहते हुए झरना (जल) हमें निरंतरता का अमर संदेश देते हुए कहते है कि जीवन की गति रूकने में नहीं चलते रहने और आगे बढ़ते रहने में हे। इस प्रकार की अनेक जानकारियों हमें जल ही देती हैं जो हमारे जीवन में कामयाब होने के लिए यह छोटी–छोटी चीजें का ज्ञान होना अति आवश्यक है। यदि किसी को कुछ खा रहा है और उसे तीखा लगा तो उसके मुंह से केवल एक ही आवाज आती है–पानी। वास्तव में जल के बिना हमारा जीवन अपूर्ण है। इसलिए जल का संरक्षण अति आवश्यक है।

03.जल संकट के कारण :–जल संकट के प्रमुख कारण वर्तमान आधुनिकीकरण के इस युग में बढ़ती हुई जनसंख्या है, क्योंकि बढती हुई जनसंख्या की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जल का विभिन्न प्रकार से प्रयोग किया जा रहा है व उनके रहने हेतु घर बनाया जा रहा है–वृक्षों की कटाई करके उनसे खाद्य आपूर्ति को पूर्ति किया जा रहा है। चूंकि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने तथा जल के स्तर को ऊपर उठाने के लिए वृक्ष अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वृक्ष से जल को अपनी ओर आकर्शित करता है। जिससे जल को अपनी

ओर आकर्शित करता है। जिससे कारण अच्छी वर्षा हो पाती है। जिससे जल स्त्रोंतो पर जल की पूर्ति हो जाती है। जिससे चारों ओर हरियाली छा जाती है। परन्तु पिछले कुछ वर्षो में जनसंख्या वृद्धि के कारण जल के दुरूपयोग में तेजी आ गई है। क्योंकि इनकी खाद्य आवश्यकता की पूर्ति करने हेतु कृषि भूमि लगातार विस्तार किया जा रहा है। जहां एक फसल लिया जाता था वहॉ एक से अधिक फसल लिया जा रहा है। और इसके लिए अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है और इसके लिए अधिक सिंचाई के लिए जल की अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए कहा जा रहा है कि फसल उत्पादन (खरीफ) फसल में अधिक जल का दुरूपयोग हो रहा है। फलतः पिछले कुछ दिनों में जल (भूमिगत जल) जमीन की खुदाई करने से 40–80 फीट तक मिल जाता था वहीं अब यह बढ़कर 200 से 400 फीट तक खुदाई कराने पर ही मिलता है। इससे स्पष्ट होता है की जल संकट की स्थितियां निर्मित हो रही है। जिसका प्रभाव मानव जीवन में देखने को मिल रहा है। अतः स्पष्ट है कि जल संरक्षण अति आवश्यक है अन्यथा आने वाली हमारी भावी पीढ़ी को यह उपलब्ध नहीं हो पाएगी। इसलिए यह पंक्ति याद आती है कि –

''जल ही है जीवन का सोना। इसलिए इसे तुम कभी न खोना।।''

04.जल संरक्षण के उपाय :– बढ़ती हुई इस जल संकट की समस्या को दूर करना अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा हमारे इस धरती पर कोई भी जीवित नहीं बचेगा। पृथ्वी का तो अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इस भयावक संकट को दूर करने के उपाय है ।**01.वृक्षारोपण :–**यह एक ऐसी विशिष्ट प्रणाली है जिससे जल संकट को आसानी से दूर किया जा सकता है। क्योंकि आधुनिकीकरण के इस युग में वृक्षों की कटाई में तेजी आ गयी है तो इस कटाई पर प्रतिबंध लगाकर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की आवश्यकता है। जल को वृक्ष अपनी ओर आकर्शित करती है। जिससे अच्छी वर्षा होती है ।**02.जागरूकता :–**ग्रामीण स्तर के लोगों में प्रायः देखा गया है कि लोगों में जागरूकता का अभाव रह जाता है। इसलिए टी.वी., मोबाईल, आदि के माध्यम से जागरूकता बढ़ाया जा सकता है और साथ ही लोगों को (खरीफ) फसल ही बोकर रबी फसल (दाले वाली) फसल की बुवाई नही करना चाहिए क्योंकि रबी फसल में जल की आवश्यकता कम होती है।

''जन–जन का नारा है, जल से ही जीवन हमारा है। **03.वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम :–**इस सिस्टम को अपना कर भी जल संकट को दूर किया जा सकता है क्योंकि इस विधि में प्रायः वर्षा के जल को छत से होते हुए पाइप के माध्यम से भूमि के अंदर भेजा जाता है जिससे यह जल भूमिगत होते रहती है। 04.रूफ टॉफ :–यह एक प्रकार का प्रवलित जल संग्रहण विधि है। इसमें विशेषतः छत के माध्यम से होते हुए वर्षा के जल को नीचे बनी टंकी में एकत्रित किया जाता है और उस जल का प्रयोग आवश्यकता अनुसार फसल उत्पादन, वाहन साफ करने (धुलाई) पेड –पौधों, बागवानी आदि चीजों में किया जाता है।

05.कानूनी स्तरः–कानून या नियम बनाकरण इसे लोगों को मनवाने के लिए प्रेरित कर इस समस्या को दूर किया जा सकता है।

06.उपसंहार :–वास्तव में जल के बिना हमारें जीवन की कल्पना तक नहीं किया जा सकता है। जल ही वह प्राकृतिक संसाधन है जो हम सबके लिए पूरी इस पृथ्वी पर रहने वाले हर एक प्राणी के लिए महत्वपूर्ण ही नहीं अपितु अत्यंत आवश्यक है। परन्तु पिछले कुछ वर्शो से इस पर सरकार भी काफी ध्यान दे रही है। साथ ही जन साधारण भी इस समस्या को समझ रहे है। विश्व जल दिवस 22 मार्च को इससे आधारित ''जल है तो कल है'' इस विशय को लेकर इस पर भी भव्य आयोजन कर लोगों कमें जागरूकता लाया जा रहा है। वर्तमान समय की इस भयावक समस्या को मिटाना अत्यंत आवश्यक है।

''जल ही है जीवन की आशा।
इस संकट को दूर करने में करिये न निराशा।।

नारी शक्ति



नाम– रोमा साहू
कक्षा – एम.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर (गणित)
महाविद्यालय – बी.सी.एस.शास.स्नात, महाविद्यालय धमतरी
मो. न. – 7828426793

" मुस्कुरा के दर्द भूला के,
रिश्तों में बाँधे दुनिया सारी,
हर पथ को रोशन करने वाली,
वो शक्ति है एक नारी।"

प्रस्तावना :– नारी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। नारी के बिना हम समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। नारी के अंदर सहनशीलता, धैर्य, प्रेम ममता और मधुर वाणी जैसे अनगिनत गुण विद्यमान होते हैं। वह बहुत से क्षेत्रों में पुरुषों से बेहतरीन कर अपनी शक्ति का परिचय देती है। नारी हमारे समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी है। नारी का विकास किए बिना राष्ट्र विकास असम्भव है। इसलिए नारी को जगत जननी कहा जाता है। नारी ही माता के रूप में बच्चों को पालती हैं, पत्नीं और बेटी के रूप में सेविका का कार्य करती हैं, और देश की आन–बान शान के लिए वह वीरांगना के रूप में रक्षा भी करती है। इसलिए सम्पूर्ण नारी जाति को "नारी शक्ति" की संज्ञा दी जाती है।

प्राचीन काल में नारी शक्ति :– प्राचीन समय से ही स्त्री ने समाज के विकास एवं संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालांकि उस समय स्त्री की दशा बहुत सोचनीय थी, बहुत सी सामाजिक कुरीतियाँ उन पर थोपी गयी थी। उस समय राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर जैसे महान समाज सुधारकों ने नारी स्वाधीनता हेतु आवाज उठाई, जिससे स्त्रियां जागृत हुई एवं अपनी विद्या, बुद्धि एवं कर्त्तव्य शक्ति बल पर उन्होंने समाज में विशेष पहचान बनाई। झाँसी की रानी, कल्पना चांवला और इंदिरा गाँधी जैसी बहुत सी महिलाएँ रही है जिन्होंने समय–समय पर नारी शक्ति का परिचय दिया है और समाज को बताया है कि नारी अबला नही सबला है।

''अबला नहीं सबला है, शक्ति का नाम नारी है,
जग को जीवन देने वाली मौत भी उससे हारी है।''

नारी का संघर्ष :– पिछली कुछ सदियों में भारत की महिलाओं ने कड़े संघर्ष का सामना किया है। मध्य युग में समाज में महिलाओं का स्तर घटते–घटते बहुत निम्न हो गया था। समाज में बाल विवाह प्रथा, सती प्रथा, भ्रूण हत्या लड़कियों को कम शिक्षित करना, उन्हें लड़कों से कमतर आंकना, महिलाओं को केवल घर के कामकाज तक ही सीमित रखना इत्यादि बुराइयां फैल चुकी थी। इन सब बुराइयों से संघर्ष करते–करते भारतीय नारी आज यहां तक पहुंची हैं। कई सुधारवादी आंदोलन हुए, जिन्होंने महिलाओं और बालिकाओं को उनके अधिकार दिलाने की कोशिश की। धीरे–धीरे युग बदला और समाज में महिलाओं की स्थिति सुधरी।

आधुनिक युग की नारी शक्ति :– आधुनिक युग में भी महिलाओं ने अपने अधिकारों के बारे में जाना है और अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं लेने लगी है। आज की महिला कोमल और मधुर होने के साथ–साथ जागरूक भी है। उसने अपने अंदर की नारी शक्ति को जागृत किया है और अन्याय का विरोध करना शुरू किया है। लेकिन फिर भी वह आज पूर्णतया सुरक्षित नहीं है। आज भी पुरुष वर्ग के कुछ लोग नारी को कमजोर और निस्सहाय ही समझते है। वह नारी को मानसिक व शारीरिक प्रताड़ना देते हैं, नारी का पल–पल अपमान करते हैं। लेकिन जिस तरह से आए दिन महिलाओं पर दुराचार, शोषण, छेड़खानी और घरेलू उत्पीड़न के मामले सामने आते हैं लेकिन ऐसे लोगों को यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि अगर नारी की सहनशीलता कहीं खत्म हो गई और नारी ने शक्ति का रूप ले लिया तो उसके अस्तित्व को मिटाने से कोई भी नहीं बचा सकता। इतिहास गवाह है जब–जब नारी का सब्र टूटा है तब–तब प्रलय अवश्य आई है।

आज रूढ़िवादी मान्यताओं और पुरुष प्रधान विचारों को महिलायें लगातार चुनौती दे रहीं है और हर क्षेत्र में अपने हुनर को आजमा रही है। आज समाज के पढ़े लिखे लोग लड़कियों की शिक्षा के प्रति जागरूक हो रहे हैं और शिक्षित महिलायें देश के विकास में अपना अहम योगदान दे रही हैं।

आज की नारी बस और रेल चलाने से लेकर विमान तक उड़ाती है। तकनीकी और विज्ञान के क्षेत्र में नारी अपना परचम लहरा रही है। घर के हर सुख–दुख से लेकर व्यापार के फायदे नुकसान तक के बारे में वह सोच रही है। आज की नारी सशक्त नारी है।

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के अनुसार – ''भारत की महिलाओं की दृढ़ इच्छाशक्ति, उनकी कल्पनाशीलता, उनकी त्वरित निर्णय लेने की क्षमता निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की उनकी कठोरता और उनकी कड़ी मेहनत की पराकाष्ठा, यही हमारी नारी शक्ति की पहचान है।

उपसंहार :– आज की नारी समाज में एक उत्कृष्ट स्थान रखती है। आज समाज में नारी सशक्त भूमिका निभा रही है परन्तु यह महिला सशक्तिकरण तभी सार्थक है जब महिलाओं को अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता पूर्ण रूप से प्राप्त होगी। उनके लिए क्या सही है और क्या गलत यह तय करने का अधिकार भी पूर्ण रूप से उनके पास हो। आज देश की महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा रहा है और उन्हें सिखाया जा रहा है कि वह अपने जीवन में हर तरह से आत्मनिर्भर कैसे बने। आत्मनिर्भरता ही नारी शक्ति की असल पहचान है। जिस दिन देश की हर एक महिला आत्मनिर्भर बन जाएगी उस दिन सही मायने में हमारा भारत देश एक विकसित देश कहलाएगा। नारी शक्ति का उत्थान केवल 50% आबादी का सशक्तिकरण नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की सफलता है। जब नारी सशक्त होगी, तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा। नारी का सम्मान और उन्हें समान अवसर देना ही एक प्रगतिशील समाज की असली पहचान है।

''सृष्टि के सृजन को गोद में पालती है,
नारी शक्ति हर मुसीबत से लड़ना जानती है।''

(धन्यवाद)

जल है तो कल है



नाम – खुमान सिंह भाट
शिक्षा – ग्रेजुएशन
कॉलेज – शास. डारनबाई महाविद्यालय गुरुर, बालोद
मो. नं. –8602076816

नीले – नीले गगन थे काले से हो रहे है,
तेवर तो देखो उनके क्या से क्या हो रहे हैं ।।
हिमपात हो रही है, भूकँप भी आ रहा है,
बर्बादी का आलम ये चारो ओर छा रहा है ।।

परिदृश्य देख कर ये ख्याल आ रहा है,
मिजाज मौसम का यू हीं बदल रहा है।

वसुधा हताश होकर स्वरूप अपना दिखा रही है ,
देव तुल्य पीपल में कुल्हाड़ी चला रहा है।
दिखावे के लिए घर में मनी प्लांट लगा रहा है,
ये कृत्य देख तुम्हारी माँ तुलसी लज्जा से सिर अपनी झुका रही है।

निशा काल में शीतल वायु न दे रहा है,
वाह रे मानव तुने कैसा ये पथ अपनाया है।
धरती का श्रृंगार मिटा के कल कारखानों को लगाया है,
देख इन हरकतों से तेरी मिजाज मौसम का यू हीं बदल रहा है ।
विकास कर लो जितना भी और सक्षम हो जाओगे ,
वातावरण है दुषित शीतल वायु कहाँ से लाओगे ।
भाट कहता है बात तुम मेरा ये मान लो,
एक पेड़ माँ के नाम कर
जीवन अपना ये संवार लो।

धमतरी की सांस्कृतिक विरासत



नाम – उपेन्द्र कुमार
पिता – डामन लाल साहू
कक्षा – एल.एल.बी.–द्वितीय सेमेस्टर
कॉलेज – बी.सी.एस. पी.जी. कॉलेज धमतरी
मो.न. – 9340427594

चित्रोत्पला महानदी की बहती कहानी, धमतरी की मिट्टी, सोने सी निशानी।
लहरों में इतिहास, हवाओं में गीत, हर कोना कहता–यहाँ बसता है प्रीत।

रविशंकर सागर बांध का जल, जीवन का सार, धान की बालियों में मेहनत का संसार।
हरियाली ओढ़े खेतों की मुस्कान, यहीं से खिलता खुशियों का जहान।

सिहावा पहाड़ियों का शांत उजियारा, ऋषियों की तपोभूमि, पावन किनारा।
जहाँ हर पत्थर में छिपी है बात, प्रकृति सुनाती सदियों की सौगात।

मंदिरों की घंटी, आस्था की शान, लोकनृत्य में थिरकता पूरा जहान।
ढोल की थाप और गीतों की लय, संस्कृति यहाँ हर दिल में बस गई।

जबर्रा इको टूरिज्म के जंगलों की ठंडी छांव,हर पत्ता बोले–यही है सुकून का गांव।
गंगरेल जलाशय का "मिनी गोवा" रंगीन दृश्य, लहरों में हंसी, मन मे नया स्पर्श।

नरहरा जलप्रपात की मधुर झंकार, गहनदार जलप्रपात का गूंजता प्यार।
ठेमली आइलैंड जैसे सपना साकार, प्रकृति रचती हर दिन नया श्रृंगार।

सनसेट व्यूपॉइंट फुटहामुडा का सुनहरा वो पल,जहाँ सूरज भी झुककर करता नमन सरल।

धमतरी..... तू केवल एक नाम नहीं, यहाँ हर दृश्य कोई आम नहीं।
संस्कृति, प्रकृति और विश्वास का संगम,तू ही है छत्तीसगढ़ का सच्चा आलम।

धमतरी..... एक एहसास, एक पहचान, जहाँ हर दिल मे बसता हिंदुस्तान।।

छत्तीसगढ़ी लोककला



नाम – खुमान सिंह भाट
शिक्षा – ग्रेजुएशन
कॉलेज – शास. डारनबाई महाविद्यालय गुरुर, बालोद
मो. नं. –8602076816

जाना है सबला दुरिहा, फेर काबर नई मानस तै ह बहिया ।
जेला पाय तेला सुनावत हस राम कहानी, कतिकेच ल घलो सुते रबे।
येदे होगे बिहिनिया... 2
लिपाय तुलसी के चँवरा देखव कईसे लजावत हे,
रातकुन के बोरे बासी घलो अड़बड़ सुहावत हे।
फेर का होगे से परानी मन ल, पीज्जा रोटी के अगोरा म,
अंगाकर अऊ पान के रोटी ल भुवावत हे।
कतिकेच ल कहाँव ग, मोरो आवत होही नगरिहा।
दोनो सगरी परानी मिलके, गाबोन करमा, सुआ अऊ ददरिया।
यहू करमा सुवा अऊ ददरिया के, अब नई हावय कोनो सुनईया ।
अब तो आगे लक्ष्मी डी.जे. ,ता कोन होही राऊत नाचा के देखईया।
ये फईसन में पुरा दुनिया मोहागे,तिजा पोरा के तिहार में...।
तिजा पोरा के तिहार म ठेठरी, खुरमी के रंधाईया घलो नंदागे।
गाँव में सुध्धर सुंता कराके कराथे रामायणअऊ गीता,रात भर अच्छा झुमरके।
होवत बिहनिया देथे कुकरी बोकरा ला नेवता, अईसन में हम दुनिया ला का बताबोन ग।
आवत अईसन मन ला, जड़ सुद्धा उखाड़ फेकन ग।
आवन जुड़ मिलके गोहार लगाबोन ग, हमर ऑचल ला एक ।
नवा पहचान दिलाबोन ग, सगरो परानी जुर मिल के ।
सुंता के बीड़ा उठाबोन ग, नवा जतन नवा सुराज।
दियना जलाबो चंदा सुरूज बन के, दुनिया में अंजोर बिगराबोन।

नारी शक्ति

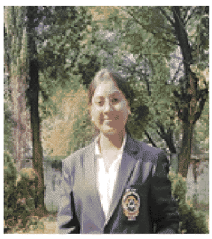

नाम – क्षमता
कक्षा – बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
कॉलेज – बी.सी.एस. पीजी कॉलेज धमतरी
मो.न. – 6268132790

माना कहते हो कि औरत ने बाहरी दुनिया नहीं बनाई है,
एक भी पत्थर एक भी ईंट किसी इमारत ने ना लगाई है।
पर जिस औरत का सदियों तक घर से निकलना मना था,
जिसका दायरा जिसकी दुनिया, सब किसी और ने ही चुना था।
तो बाहर आकर पत्थर जोंड़ती, या समाज की बंदिशें जोंड़ती,
जिस मजदूर ने वो ऊँची मीनारे खड़ी करने में जान लगायी थी।
उसकी भूख मिटाने को रोटी, कौन और किस औरत ने पकाई थी,
शहर खड़ा क्या हो पाता जो घर में तो धुऐं को ना पीती।
तुम्हारी हर रचना के पीछे उसकी एक 'उम्र' भी बीती,
वक्त जब बदला और जब उसको झरोखे से थोड़ी हवा मिली ।
कैसे उसी 'कमजोर' हाथ से इतिहास की नई राह खिली,
अहिल्याबाई होलकर और, रानी रासमणी याद है।
काँशी में रामेश्वर और दक्षिणेश्वर क्या बस नाम है,
आज भी तपती सड़कों पर, ढोती वो ईटें दिखती है।
इस कांक्रीट के जंगल में, वो अपना पसीना सींचती है,
तो आज अगर वो केबिन की, कुर्सी पर बैठी दिखती है।
किसी की खैरात की नहीं, अपनी आजादी की कीमत लिखती है,
तकलीफ 'सुविधा' से नहीं, तुम्हारे बराबर के कुनबे में है।
ईंटें उसने भी जोड़ी और, साथ ही पीढ़ियाँ तराश दी,
घर की मूख बताया फिर उसने पत्थर में कैसे साँस ली?
मत कहना कि दुनियाँ बनाने में, उसका कोई हाथ नहीं,
और याद रखना बिना 'नीव' के किसी 'मीनार की औकात नहीं।
ये आजादी खैरात नहीं, और ना हीं कोई एहसान है,
हक है जीने का, और बरतना भी उसकी पहचान है।।

नारी शक्ति



नाम – गीता सारथी
पता– गणेश चौक धमतरी
मो.नं.– 6266057250
विषय –नारी, तुम जाना

नारी, तुम जानो, तुम भी हो इंसान ये मानो,
बरसों से गुलामी में बीती जो जिंदगी ।
अब हर जंजीर को साहस से तोड़ डालो।
जैविक रूप से भले अलग हो तुम,
पर शक्ति की ज्योति तुमसे भी प्रखर है।
अपने हौसलों की आवाज उठाओं,
और दुनिया को यह सच समझा दो।
नारी, तुम जानो, तुम भी हो इंसान ये मानो,
समाज मे तेरी एक ही पहचान हो।
सिर्फ नारी नहीं, सबसे पहले खुद को इंसान मानो।
उठो, अपने सपनों को उड़ान दो।
जो भी बंधन राह में आएं, उन्हें अपने साहस से आज मिटा दो।
अब समय है अपनी पहचान बनाने का,
अपने अधिकारों की लौ जलाने का।
नारी हो तुम कमजोरी नहीं,दुनिया बदलने वाली शक्ति की मिसाल हो।
तुम शक्ति हो तुम साहस हो,तुम ही सृजन की पहचान हो।
अब खुद को पहचान ले नारी, तेरे कदमों मे ही नया आसमान हो।

''मै स्त्री हूँ''



नाम – दिक्षा ध्रुव
पिता – श्री कुंजबिहारी ध्रुव
शिक्षा – एम.ए. इकॉनामिक्स
कॉलेज – महर्षि वेदव्यास शास. स्ना. महाविद्यालय भखारा
मों.न. – 9691699078

मैं स्त्री हूँ, वह स्त्री जिसे,
तुमने त्याग के मूर्ति लिखा।
प्रसाधित और अलंकृत लिखा।
क्यों नहीं लिखा मुझे,
अपना अस्तित्व निर्माता।

क्यों न दिया मुझे वह जो मुझे चाहिए था,
मेरी श्रृंगारिकता तुम्हें विमुग्ध करती,
तो सरलता उपेक्षित क्यों ?
मेरे प्रेम वात्सल्य को सराहते हो,
पर विद्रोह से इतना सभीत क्यों ?

पुरुष के अभिमान को बल और
स्त्री स्वाभिमान को अभिमान लिखा।
मेरी संयम को कमजोरी,
और प्रेम मौन को डर लिखा।

बेशक लिखा है तुमने मुझे माता
पर क्या? किया स्वतंत्र मेरे अपने विचार,
सिर्फ मेरे लिए।
आखिर मेरी सफलता से टीस होती है तुम्हें।

हाँ मैं स्त्री हूँ , वह स्त्री,
जिसमें संवेदनाएँ जीवित हैं,
जागृत है, और करती है सवाल,
हर उस शख्स से जिसने,
मुझे कमजोर माना।
क्या तुम्हारी संवेदना जीवित है सिर्फ मेरे लिए ?

नारी शक्ति – मैं कहाँ हूँ



नाम – माधुरी मारकंडे
पिता – श्री नारायण दास मारकंडे
शिक्षा – एम.ए.पॉलिटिकल सांइस
कॉलेज – बी.सी.एस. पी.जी. कॉलेज धमतरी
मो. नं. – 9329124373

मैं सुनती रही खड़े रहकर
अपलक आँखो को झपकाएं

उन सबकी बातों को यही की
तुम कौन हो और कहाँ हो.....
किसी ने कहा–तुम जो भी हो
तुम्हारी जगह सिर्फ रसोई घर में है.....

किसी ने कहा तुम्हें आता ही क्या है
तो किसी ने कहा ठहाके के साथ
अरे तुम्हें सजना भी आता है क्या ?

कभी देखी है शक्ल अपनी आईने में.....
तो किसी ने कहा तुम्हें बात करना भी आता है क्या?
और मैं अपनी अस्तित्व को उन शब्दों में ढूंढती रही

मैं कहाँ हूँ उन शब्दों में पर मैं कही नहीं मिली
मेरी आत्मा रसोई घर के कोने पर जाकर चीखती रही....
एक विलाप के साथ
मैं कहाँ हूँ.....
फिर खामोशी से पकती हुई रोटी बोली
तुम मेरी मिठास में हो.....

फिर चूल्हे ने कहा तुम मुझ में हो
मेरे प्रचंड तेज में देखो तुम अपनी सूरत को
तुम चमक रही हो.....

फिर पकते हुए चावल ने कहा तुम मुझ में हो
मेरे मुलायम भाव की तरह तुम्हारी बातें हैं.....

अंत में एक आवाज आई तुम्हारा अस्तित्व सब में है
और सबकी अस्तित्व में तुम हो.....

तुम जहाँ भी हो तुम, तुम में हो
सिर्फ तुम में.....

धमतरी की सांस्कृतिक विरासत



नाम – जयंत सिन्हा
कक्षा – बी.पी.ए. तृतीय वर्ष
कॉलेज – ''इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़''
मो. नं.– 8839003927

गौरव मयी इतिहास तेरा,तेरी महिमा न्यारी।
गाती नदिया झूमे जंगल ,खनिज सम्पदा सारी ।।

चरण पखारती महानदी जो, अंगारमोती मेरी माई है।
सिहावा पर्वत श्रृंगी ऋषि जो, राम जनम सफल कराई है।।

इससे ही एकत्र हुआ है ,जिसने तुम्हें निहारा है।
शिक्षा संस्कृति लोक कला की ,जहाँ बहती निर्मल धारा है।।

धान की बाली जहाँ, अपनी झलक दिखाती है।
धानों का राजा वो गढ़, धनहा धमतरी कहलाती है।।

प्रातः काल माँ विंध्यवासिनी, रुद्री में गोधुली की वह शाम।
धनहा धमतरी की मिट्टी तुमको, शत्–शत् कोटी तुम्हें प्रणाम।।

''मै नारी हूँ''

नाम–त्रयंबिका साहू
कक्षा– बी.एस.सी. नर्सिग सप्तम सेमेस्टर
विश्वविद्यालय – फ्लोरेन्स कॉलेज ऑफ नर्सिग लिमतरा
मो.नं. – 7723849479

मैं नारी हूँ, मैं शक्ति हूँ, संघर्षो की अभिव्यक्ति हूँ,
मौन नहीं अब मेरी पहचान, मै खुद अपनी ही भक्ति हूँ ।
कभी आंचल में ममता भरती, कभी रण में तलवार बनती,
समूच पड़े तो चट्टान बनूँ, और जरूरत पर प्यार बनती।
रोक सको तो रोक लो मुझको, मै लहर हूँ, मै बह जाऊंगी,
बंधन जितने भी बांधोगे ,उतनी ही मैं बढ जाऊंगी।
मेरे सपनों को मत तोलो,ये आकाश से भी ऊँचे है,
मै मिट्टी की वो खुशबू हूँ ,जिससे जीवन के रंग रचे है।
ना अबला हूँ, ना बेचारी, मैं साहस की परिभाषा हूँ।
मै हर युग की नई कहानी,मै खुद अपनी अभिलाषा हूँ।
मैं नारी हूँ, मै ज्योति हूँ, अंधकार में भी रोशनी हूँ।
मुझे पहचानों, मुझे समझो, मै ही सृष्टि की शक्ति हूँ।
"आज जरूरत है नारी को बदलने की नही,
बल्कि
उसे समझने की ,उसे स्वीकार करने की
क्योकि
जिस दिन नारी अपनी शक्ति पहचान लेगी
उस दिन इतिहास नही,भविष्य लिखा जायेगा"

माँ



नाम –झरना सेन
कक्षा –बी.ए. हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर
कॉलेज – सुखराम नागे महाविद्यालय नगरी
विषय – छत्तीरागढ़ी लोक कला
मो. नं. –8965090734

तोर ममता के छाँव में, मैं दुनिया ला जानेव,
तोर आँचल के महक से. हर पीरा ला भुलायेव ।
जब पहली बेर आँखी खुलिस, तब तै गले लगाये मोला,
अनजानी दुनिया मा, तैही तो पाये मोला ।।
तोर लोरी के मीठ धुन, आज भी याद हे मोला,
तोर बात, तोर सीख, हर रास्ता दिखाये मोला ।
माँ ते मोर बर शब्द नहीं, सारी दुनिया के सार हरस,
तोर बिना ए जिन्दगी मोर, जईसे सुना से संसार हरे।
जब गिरेव में पहली बेरा तै ही तो दऊडत ले आये,
मोर आँसू से पहली ही, तोर आँखी मा आँसू आये ।
मोर सब छोटे से खुशी में, तै अपन सुख पाये,
अपन हर अरमान ला छोड, मोला तै आगे बढ़ाये ।
रात–रात भर जागे तै, जब मै चैन से सोंएव,
मोर सब एक दर्द ला, तै चुपचाप ढ़ोये हस ।
तोर मया के त्याग बर का बोलो, ये शब्द भी कम पड़ जात हे,
तोर जईसे ए दुनियाँ में कहाँ कोई ह पात हे।
तोर हाथ के वो खाना, आज भी सबसे मिठास है,
तोर गारी मे छुपाये, ममता के दुलार है।
जब भी मैं थक जाथो ये दुनिया ले,
ता तोर गोद ,याद आथे, हर एक बेरा से ।
तोर ममता सागर से भी गहरा हे,
तोर माफी भगवान ले भी बड़े हावय।
मैं चाहे कतना भी गलती के गलती करव माँ,
तै हर बेरा मा मोला गला लेथस ।
तोर आँखी म जो सपना हे मोर लिए,
वही मोर असली मंजिल हवय।
तोर भरोसा के ताकत से ही मैं हा सरी मुश्किल ले लड़े के काबिल हंव ।
तै ही मोर पहली संगी, पहली गुरु हस माँ ,
तोर बिना ये जीवन वैसे ही अधूरा सुर हे माँ
तोर रहय से ही सब कुछ पुरा है,
नई ता ये धड़कन कतना सुना – सुना हे माँ
तोर बिना ए जिन्दगी अधुरा हे माँ....

कंडेल की माटी



नाम – मोजेश कुमार साहू
पिता – लिखेश्वर साहू
कक्षा – एम.एस.सी. प्राणीशास्त्र चतर्थ सेमेस्टर
संस्था – संत गुरू घासीदास शास.स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुरूद
मो. नं.– 8878322664

अन्याय के सामने, सत्य से जुड़े रहो।
कंडेल की माटी कहे, झुको मत, डटे रहो।।
हल पकड़े हाथ कहे, अहिंसा बल है।
कंडेल की माटी का, सत्याग्रह अमर है।।
ये साधारण गांव नहीं, ये भारतीय इतिहास की पहचान है।
धमतरी की धरती पर, कंडेल गांव की अलग ही शान है।।
शांत दिखे पर भीतर इसके, संघर्षों की आग जली।
माटी के हर कण में जैसे, एक कहानी आज भी पली।।
सन् उन्नीस सौ बीस का समय, जब अंग्रेजी हुकूमत का अन्याय बढ़ने लगा।
नहर के पानी पर भी तब, कर का बोझ चढ़ने लगा।।
जिस जल से जीवन मिलता, वो बोझ बनकर आया था।
किसानों के मेहनताने पर, अंग्रेजों ने हाथ जमाया था।
अन्याय के सामने, सत्य से जुड़े रहो।
कंडेल की माटी कहे, झुको मत, डटे रहो।।
तब उठा कंडेल का, एक सरल इंसान।
बाबू छोटेलाल जी, बन गए देश की शान।।
नहीं उठाया शस्त्र कोई, ना कोई रण–रंग।
अहिंसा की शक्ति से जीता, हर अन्यायी दंग।।
अन्याय के सामने, सत्य से जुड़े रहो।
कंडेल की माटी कहे, झुको मत, डटे रहो।।
गांधी जी भी आ गए, देखनें यह संघर्ष।
कंडेल बना उदाहरण तब, सत्याग्रह का गर्भ।।
हल थामे उन हाथों में भी, क्रांति का था जोश।
शांत स्वर में गूंज रहा था, स्वतंत्रता का घोष।।
अन्याय के सामने, सत्य से जुड़े रहो।
कंडेल की माटी कहे, झुको मत, डटे रहो।।
धमतरी का महाविद्यालय, जिनसे पाया मान।
आज उसी के मंच पे गूँजे, बाबू छोटेलाल का नाम।।
इस माटी को, मैं हाथों से छूता हूँ।
तो इतिहास को, अपने भीतर बुनता हूँ।।
ये धूल नहीं है, ये बलिदान की निशानी है।
आने वाली पीढ़ी को, देती नई कहानी है।।
चाहता हूँ जीवन में, कुछ ऐसा काम कर जाऊँ।
जलकर भी इस दुनिया में, थोड़ा उजियारा भर जाऊँ।।
अगर राख बन जाऊँ, तो मिट्टी में मिल जाऊँ।
नए बीजों को ताकत दूँ, नया जीवन फिर उगाऊँ।।
अन्याय के सामने, सत्य से जुड़े रहो।
कंडेल की माटी कहे, झुको मत, डटे रहो।।
सत्याग्रह की इस धरा को, शत–शत मेरा प्रणाम।
कंडेल नाम अमर रहे युग–युग गूंजे नाम।।

नारी



नाम–टीकेश्वरी साहू
शिक्षा – बी.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)
कॉलेज – साइंस कॉलेज दुर्ग
मो. नं.– 6266400904

अपने मन की न कुछ करने की सलाह दी गयी, माँ–बाप की जिद से आज वो ब्याह दी गई।

मांग भरते ही उसका जीवन कैद हो गया, रंगों से भरा ख्वाब सारा सफेद हो गया।

पति और परिवार की सेवा में वह पूर्णतः खो गई, ससुराल रूपी पिन्जरे में स्वयं ही कैद हो गई।

घर के काम ने उसे खुद का काम भूला दिया, अनगिनत सोंच ने तब बैचेनी की नींद सुला दिया ।

एक सपना था जो आँखों से फिसल गया, आज फिर दिन किचन में ही निकल गया ।

शादी करने की बात तो उसने भी कही थी, पढ़ाई पूरी करते ही तो वो भी तो सहीं थी।

डॉक्टर बनने के सपने धरे के धरे रह गए, जहर पीकर मर जाऐंगे हम, मां–बाप कह गए।

पति को अपने ख्वाब बताती तो कहाँ वो सुनता था,उसकी हाथों में किताब की जगह बर्तन ही तो चुनना था।

सास–ससुर को भी वह अपनी बात कैसे समझाए, जो बाहर जाने से पहले बहु को बोले कि चाय बनाकर जाए।

एक सपना था जो आंखों से फिसल गया, आज फिर दिन किचन में ही निकल गया।

अब तो अपना जीवन उसने किचन में ही देख लिया, सारे ख्वाबों को तोड़कर एक और रोटी सेक लिया।

सोंच से ज्यादा ऊँचे अब बर्तनों के देर हो गए, डॉक्टर बनने के सारे सपने धीरे–धीरे।

खैर हो गए

सक्षम बनने से पहले वो दुल्हन बना दी गई, रोटी सेकने के लिए उसकी किताबें जला दी गई।

आँगन की चिड़िया ने आज उड़ना ही भूला दिया, सोने के पिंजरे ने उसे खून के आँसु रूला दिया।

एक सपना था जो आँखो से फिसल गया,आज फिर दिन किचन में ही निकल गया।

हीन सोंच से निकलकर नारी को अब बदलना पड़ेगा, इसरो की राह छोड़कर खुद की राह में चलना पड़ेगा।

रोटी सेंकने के लिए किताबें अब जलेंगी नहीं, चिड़िया आसमाँ में उड़ेगी बेड़ियों में बंधेगी नहीं।

अपनी कमजोरियों को अपनी ताकत बनाना होगा, नारी के रूप में सम्मानजनक स्थान पाना होगा।

किताबों के उन अक्षरों को हिम्मत में बदलना पड़ेगा, बेचारी के दाग से निकलकर नए अस्तित्व में ढलना पड़ेगा।

वो सपना तुम आँखो से फिसलने न देना, आज फिर दिन किचन में निकलने में देना।।



नाम –जयंत कुमार
महाविद्यालय – इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़
मों.न. – 8839003927

हाँ लोक बोलथे, हाँ लोक बोलथे
मय लोक अंव रे,
मोला बचा लव रे बेटा, मय लोक अंव रे

मय जल, जंगल संस्कृति अव, पुरखा के मय सुरता अंव।
घर के कुल देवा मय, गढ़े मुरदा के हुरदा अंव।।

मय लोक अंव बेटा.....
मय रित अंव, मय गीत अंव, अंतस मा समाय संगीत अंव।
सबला मया दुलार देवइया मय, लहरावत छत्तीसगढ़ गेंदा के फूल अंव।।

मय लोक अंव मोला.....
मय मरार के केरा बारी अंव, बगीया के फुलवारी अंव ।
घर के तुलसी चाँवरा मय, सियान के गोटियारी अंव।।

मय लोक अंव .....
अमरइया के छाँव अंव, सावन के बरसाती अंव।
ठेठवार के नोई मय, गिल्ली, भंवरा, बाटी अंव।।

मय लोक अंव .....

दफड़ा, झाँझ मंजिरा अंव, सुवा पंथी रिलो ददरिया अंव।
माथे के तोर बिंदिया मय, अंगरी के मिही बिछिया अंव।।

मय लोक अंव, मोला बचा.....
जिनगी भरमय तोला पलइया,मय छत्तीसगढ़ के माटी अंव ।
मय लोक अंव बेटा, मोला बचा लव रे, मय लोक अव बेटा, मय लोक अंव ।।

युग :– बेहतर भारत का स्वर्णिम भविष्य



नाम – चंद्रशेखर सोनी,
कक्षा – एम.एस.सी. भौतिकी
कॉलेज – शासकीय लोचन स्नोकोत्तर महाविद्यालय राजिम
मो. न. – 9340618632

युवाओं का शंखनाद सदियों की गठरी निद्रा से, अब राष्ट्र मेरा जागा है, इक्कीसवीं सदी के स्थान पर,
युवा शक्ति का धागा है, ये केवल शब्द नहीं '2047' ये एक महा–संकल्प है।
श्रम, शक्ति और नवाचार ही, इसका एकमात्र विकल्प है।

युवाओं का शंखनाद सदियों की गठरी निद्रा से,
अब राष्ट्र मेरा जागा है, इक्कीसवीं सदी के स्थान पर,
युवा शक्ति का धागा है,
ये केवल शब्द नहीं '2047' ये एक महा–संकल्प है।
श्रम, शक्ति और नवाचार ही, इसका एकमात्र विकल्प है।
स्वतंत्रता के सौवें वर्ष का, हम सपना बुनने निकले हैं,
मिटाकर दासता की बेड़ियाँ, हम आगे बढ़ने निकले हैं।
अब 'मेक इन इंडिया' की गूंज, सरहदों के पार सुनाई देती है,
भारतीय युवाओं की मेधा, अब दुनिया को दिखाई देती है।
ये युवा हाथ ही अब, डिजिटल क्रांति को गढ़ रहे हैं,
गाँवों के कच्चे रास्तों से, स्मार्ट सिटी की ओर बढ़ रहे हैं।
खेतों में ड्रोन की उड़ान हो, या अंतरिक्ष की अनंत दूरी,
युवाओं के पसीने से ही होगी, हर एक महत्वाकांक्षा पूरी।
हमे बनना है विश्व–गुरु फिर, वो प्राचीन गौरव पाना है,
नालंदा और तक्षशिला का, वैभव वापस लाना है।
सिर्फ डिग्रीयाँ ही काफी नहीं, हमें कौशल को अपनाना है,
हर हाथ में हुनर हो ऐसा, जो दुनिया को राह दिखाना है।
हम नवाचार के अग्रदूत, हम स्टार्टअप की शक्ति हैं,
देशभक्ति का मतलब अब, कर्मठता की भक्ति है।
अत्याचार के अंधकार को, नैतिकता से जीतेंगे ।
हम न्याय और समरसता के, नए अमृत रस को पीयेंगे।
विकसित भारत का अर्थ नहीं, केवल कंक्रीट के ऊँचे मीनार,
हमें चाहिए स्वच्छ हवा, और नदियों की निर्मल धार।
प्रकृति के साथ तालमेल बिठा, हम उन्नति की राह चुनेंगे,
ग्रीन एनर्जी और सस्टेनेबिलिटी से, एक सुरक्षित भविष्य बुनेंगे।
आने वाली पीढ़ियों को, हम उपहार में हरियाली देंगे,
विकास की इस अंधी दौड़ में, हम मर्यादा की बलि न देंगे ।
युवाओं का संकल्प यही, धरती को स्वर्ग बनना है,
भारत को समृद्ध बनाकर,
वसुधैव कुटुंबकम को चरितार्थ करना है।
न रुकना है, न थकना है, बस बढ़ते ही जाना है,
2047 तक भारत को, शिखर पर पहुँचाना है।
गरीबी और अभावों को, अब जड़ से मिटाना होगा,
भारत माँ के मस्तक पर, वैभव तिलक सजाना होगा।
"उठो पार्थ! गांडीव उठाओ, अमृत काल पुकार रहा,
विकसित भारत का ये सपना, तुमको ही ललकार रहा।"
जय हिन्द, जय युवा शक्ति ।

युवा– बेहतर भारत का भविष्य



नाम– रूचि
कक्षा – बी.एस.सी.तृतीय वर्ष
पिता– होमेन्द्र साहू
मो.नं. – 9244584288

"यदि देश को बदलना है, तो सबसे पहले युवाओं को जागरूक बनाना होगा।"

मेरा नाम रूचि है। एक साधारण छात्रा हूँ, लेकिन मेरे सपने बहुत बड़े हैं– एक ऐसे भारत का निर्माण, जो शिक्षित, जागरूक और सशक्त हो। मैं मानती हूँ कि –

युवा केवल देश का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की सबसे बड़ी ताकत है।

"युवा जागेगा, तभी भारत आगे बढ़ेगा।"

हर दिन मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए लगभग 20 किलोमीटर का लंबा सफर तय करके कालेज जाती हूँ। यह सफर मेरे लिये सिर्फ दूरी नहीं, बल्कि मेरे संघर्ष मेरे धैर्य और मेरे हौसले की पहचान है। तेज धूप हो या बारिश, थकान हो या परेशानी मैं कभी रुकती नहीं, क्योकिं मुझे पता है कि मेरे ये कदम ही मेरे भविष्य की दिशा तय कर रहे है।

इसी सफर के दौरान मैनें कई ऐसे बच्चों को देखा, जो परिस्थितियों के कारण पढ़ाई से दूर हो चुके थे। यह देखकर मेरे मन में एक सवाल उठा –

"अगर हम युवा ही कुछ नहीं करेंगे, तो बेहतर भारत का निर्माण कैसे होगा।

बस उसी दिन से मैने ठान लिया कि बदलाव की शुरुआत में खुद से करूंगी।

मैंने बच्चो को प्रेरित करना शुरू किया। इसके लिए मैंने छै (छंजपवदंसै मतअपबमै बीमउम) से जुडकर समाज सेवा के कार्यों में भाग लेना शुरू किया। मैंने सफाई अभियान में अपना योगदान दिया तथा पेड़ लगाना शुरू किया और लोगो को स्वच्छता व पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया। इन छोटे–छोटे प्रयासों के माध्यम से मैंने यह महसूस किया कि जब एक युवा आगे बढ़ता है तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन अवश्य आता है।"

मैने बच्चो को प्रेरित करना शुरू किया। उन्हें समझाया कि शिक्षा ही उनका सबसे बड़ा सहारा है। धीरे–धीरे कुछ बच्चों ने फिर से पढ़ाई में रुचि लेना शुरू किया और यही मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि बन गई।

"छोटा कदम आज उठाओ कल बड़ा, बदलाव पाओ" –

एक दिन मुझे एक ऐसी बच्ची के बारे में पता चला, जो घर–घर जाकर साफ–सफाई का कार्य करती थी। उसके पास न माता–पिता का सहारा था, न पढाई के लिए संसाधन। वह 10वीं कक्षा में पढ़ रही थी, लेकिन उसके पास कॉपी, पेन, किताब, नोट्स और स्कूल ड्रेस कुछ भी नहीं थी।

उसकी स्थिति देखकर मेरा हृदय द्रवित हो उठा। मैंने बिना किसी संकोच के अपनी किताबे कॉपी और कुछ नोट्स उसे दे दिए। इतना ही नहीं, मैने अपनी स्कूल के ड्रेस भी उसे दे दी, ताकि वह आत्मविश्वास के साथ विद्यालय जा सके।

उस दिन मुझे एहसास हुआ कि किसी के जीवन में छोटी सी मदद भी बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है। इसी प्रकार एक अन्य छात्रा जो 12वीं में कुछ अंको से असफल हो गई थी। पूरी तरह समाज के तानो से निराश हो चुकी थी। उसका आत्म विश्वास तोड़ दिया था।

उस समय मैने उसे समझाया –

असफलता अंत नहीं है, बल्कि सफलता की ओर बढ़ने का पहला कदम है।

मैने उसे प्रेरित किया, अपने नोट्स दिये और उसे अवसर परीक्षा के लिए तैयार होने में सहायता की। उसकी मेहनत रंग लाई और वह सफल हो गई। उसकी सफलता देखकर मुझे जो खुशी मिली, वह शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती।

आज भी मैं विद्यार्थियों को यह सिखाती हूँ कि वे कैसे`उंतज`जनकल करे और मोबाइल का सही उपयोग करके अपनी पढ़ाई को प्रभावी बना सकते है।

और यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं एक छै ब्दकपकंजम हूँ,

और समाज के लिए कुछ कर पा रही हूँ।

युवा बदलेगा तो देश बदलेगा।

निष्कर्ष :–

अंततः मैं पूरे विश्वास के साथ कहना चाहती हूँ कि युवा ही एक बेहतर भारत की सबसे बड़ी उम्मीद है।" आज मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि अगर युवा अपने आस–पास के एक जीवन को संवारने का संकल्प ले ले, तो पूरा देश बदल सकता है।

क्योकि जब युवा जागते है तो समाज बदलता है.....और जब समाज बदलता है, तो देश अपने आप आगे बढ़ता है।"

अंत में मैं बस इतना कहना चाहती हूँ –

मैं अकेली नहीं हूँ.....मेरे जैसे लाखों युवा है, और जब हम सब मिलकर आगे बढ़ेंगे, तब एक सशक्त/शिक्षित और बेहतर भारत का निर्माण अवश्य होगा।"

छत्तीसगढ़ी लोककला



नाम– ठामेश्वरी साहू
कक्षा – एम.ए.चुर्तथ सेमेस्टर
कॉलेज– शास. सुखराम नागे महाविद्यालय नगरी
मो.नं. – 9713922217 / 9516771297

छत्तीसगढ़ी लोककला :– संस्कृति की जीवंत पहचान

छत्तीसगढ़ की लोककला यहाँ की मिट्टी लोगों के जीवन और उनकी परंपराओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि यहाँ के लोगों की भावनाओं, विश्वासों और जीवनशैली का सजीव चित्रण भी करती है। छत्तीसगढ़ी लोककला में सादगी, सहजता और प्रकृति के प्रति प्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

यहाँ की लोककलाओं में प्रमुख रूप से लोकनृत्य, लोकगीत और हस्तशिल्प शामिल हैं। पंथी, राउत नाचा, सुवा नृत्य जैसे लोकनृत्य छत्तीसगढ़ की पहचान है। इन नृत्यों में लोग समूह में मिलकर नाचने–गाते हैं, जिससे एकता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है। इन नृत्यों में उपयोग होने वाले पारंपरिक वाद्य यंत्र जैसे ढ़ोलक मंजीरा और नगाड़ा जो पूरे वातावरण को उत्साह से भर देते हैं।

छत्तीसगढ़ी लोकगीत भी बहुत प्रसिद्ध हैं। ये गीत जीवन के हर पहलू को दर्शाते हैं – चाहे वह खुशी हो, दुख हो, प्रेम हो या प्रकृति के साथ संबंध। फसल कटाई, विवाह त्यौहार और अन्य अवसरों पर ये गीत गाए जाते है।

इन गीतों की भाषा सरल होती है, जिससे हर कोई आसानी से समझ सकता है। चित्रकला और हस्तशिल्प भी यहाँ की लोककला का महत्वपूर्ण हिस्सा है। दीवारों पर बनाई जाने वाली पारंपरिक चित्रकारी, जिसे "पिथौरा" या "भित्ति चित्र" कहा जाता है यह बहुत आकर्षक होती है। बांस और लकड़ी से बनाए जाने वाले खिलौने टोकरी और अन्य उपयोगी वस्तुएँ भी यहाँ की कला को दर्शाती है। ये वस्तुएँ न केवल सुन्दर होती है, बल्कि पर्यावरण के अनुकूल भी होती है।

छत्तीसगढ़ की लोककला में प्रकृति का विशेष स्थान है।

आज के आधुनिक समय में भी छत्तीसगढ़ी लोककला अपनी पहचान बनाए हुए है। हालांकि नई पीढ़ी आधुनिकता की ओर बढ़ रही है, फिर भी लोग अपनी परंपराओं को संजोकर रखने का प्रयास कर रहे हैं। सरकार और कई संस्थाएँ भी इस कला को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहीं हैं, ताकि यह आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सकें। छत्तीसगढ़ी लोककला यहाँ की आत्मा है। यह हमें अपनी जड़ो से जोड़कर रखती है और हमारी सॉस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती है।

''माँ''



नाम–नेहल गौतम
मो.नं. – 7646914624
कक्षा – बी. काम द्वितीय सेमेस्टर
महाविद्यालय – पी.जी. कालेज धमतरी

माँ..... यह सिर्फ एक शब्द नहीं, बल्कि पूरी दुनियॉ है। जब हम ''माँ'' कहते है, तो उसमें प्यार, सुकून, सुरक्षा और अपनापन सब कुछ समा जाता है। माँ वह होती है, जो हमें बिना शर्त प्यार करती है चाहे हम जैसे भी हो, उसकी नजर में हम हमेशा सबसे खास रहते है। जब हम दुनियॉ में आते है तो सबसे पहले जिसकी गोद हमें मिलती है, वह मॉ होती है। उसकी गोद ही हमारा पहला घर होती है, जहॉ हमें सुकून और सुरक्षा का एहसास होता है। जब हम रोते है तो मॉ की एक हल्की सी थपकी हमें शांत कर देती हैं उसकी आवाज में ऐसा जादू होता है जो हमारे हर दर्द को कम कर देती है।

माँ अपने बच्चों के लिए क्या–क्या नहीं करती वह रात–रात भर जागती है, हमारी हर छोटी–छोटी जरूरत का ध्यान रखती है, और कभी भी अपने थकने या परेशान होने का एहसास नहीं होने देती। कई बार वह खुद भूखी रह जाती है, लेकिन अपने बच्चों का पेट भरकर ही चैन लेती है।

माँ का हर त्याग हर बलिदान सिर्फ हमारे लिए होता है। जैसे–जैसे हम बड़े होते है, हम अपनी दुनियॉ में व्यस्त हो जाते है, लेकिन माँ कभी नहीं बदलती उसका प्यार वही रहता है–निस्वार्थ और सच्चा। हम कितनी भी गलतियॉ करे, माँ हमें डांटती जरूर है, लेकिन उसकी डांट में भी उसका प्यार छिपा होता है। वह हमेंशा चाहती है कि हम सही रास्ते पर चलें और जीवन में सफल हो कभी–कभी हम अपनी भागदौड़ भरी जिन्दगी में माँ की अहमियत को भूल जाते है, लेकिन सच तो यह है कि मॉ के बिना हमारा अस्तित्व ही अधूरा है।

प्रायः हमने देखा है कि बड़ी–बड़ी गाड़ियों में खासकर ट्रकों के पीछे एक स्लोगन लिखा होता है ''मॉ की दुआ'' मॉ का आशीर्वाद'' ''आई तुझा आशीर्वाद, इन आशीर्वाद की कामनाओं के साथ हम कह सकते है कि मॉ का आशीर्वाद सदैव ही उनकी सुख, समृद्धि एवं सुरक्षा के लिए दुआ करती है। जब भी हम मुश्किल में होते है सबसे पहले हमें मॉ ही याद आती है। उनकी एक दुआ हमारे हर कश्ट को दूर कर देती है। माँ का प्यार किसी भी दौलत से ज्यादा कीमती होता है। इस दुनियॉ में बहुत से रिश्ते मिलते है, लेकिन मॉ जैसा कोई नहीं होता। वह हमारी ताकत है, हमारी पहचान व हिम्मत है ओर हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है।

माँ वह है जो हमारे बिना कुछ कहे ही हमारी हर बात समक्ष जाती है–हमारी मुस्कान के पीछे छिपा दर्द और हमारी खामोशी में छिपी पुकार तक। जब हम छोटे थे, तो माँ हमारी ऊॅगली पकड़कर हमें चलना सिखाती थी। गिरने पर हमें उठाती थी और कहती थी ''डर मत मै हूॅ ना। वही एक वाक्य हमारे लिए पूरी दुनियॉ की सबसे बड़ी हिम्मत बन जाता था। आज हम भले ही बड़े हो गए हों, सच यह है कि हमारी सबसे बड़ी ताकत आज भी मॉ ही है।

माँ की ममता का कोई मोल नहीं होता। वह बिना किसी उम्मीद के बस देती ही रहती है – प्यार समय, त्याग और अपना सब कुछ। कितनी ही बार उसने अपनी इच्छाओं को मार दिया, सिर्फ इसलिए कि हमारे सपने पूरे हो सकें। उसने अपनी थकान छुपा ली, ताकि हम मुस्कारा सकें। उसने अपने आँसू रोक लिए, ताकि हम कमजोर न पड़े। माँ की गोद एक ऐसी जगह है, जहॉ हर दर्द खत्म हो जाता है। चाहे जिंदगी कितनी भी मुश्किल न हो, मॉ के पास बैठते ही दिल को सुकून मिल जाता है। उसकी एक दुआ हमारे लिए ढाल बन जाती है, और उसकी एक मुस्कान हमारी दुनियॉ रोशन कर देती है। हम चाहे जितने भी बड़े हो जायें, माँ के लिए हम सदा वही छोटे बच्चे रहते है, जिन्हें वह हर मुश्किल से बचाना चाहती है।

अतः हम कह सकते है कि मॉ सिर्फ एक इंसान नहीं, बल्कि एक एहसास है– जो हर पर हमारे साथ रहता है। हमें हमेशा अपनी मॉ का सम्मान करना चाहिए, उन्हें प्यार देना चाहिए और यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हर खुशी के पीछे उनकी अनगिनत कुर्बानियॉ छिपी होती है।

विषयः– युवा बेहतर भारत का भविष्य



नााम – शशांक कंसारी
पता – मेघा, मगरलोड, धमतरी
मो.न. – 6266968877

युवा ही शुरुआत है उज्जवल भारत का सार है
उनसे ही खिलता है भारत उनका ही विश्वास है

युवा को जगाना है समय से आगे बढ़ाना है
उनसे ही है कल की सूरज,उनको ही भविष्य सजाना है

चलो युवा अब उठ चलों ,मिलकर कदम बढ़ाना है
नशा के गिरफ्त पड़े युवा को ,जागरुक कर हमें बचाना है

युवा ही है देश की धड़कन ,युवा से नव क्रियाकलाप है
युवा से ही है चुनौतियां ,युवा ही समाधान है

विकसित भारत का ज्योति लेकर,नवाचार का दीप जलाएंगे
ज्ञान, शील और एकता से ,भारत को आगे बढ़ाएगें

सपनों को सच करनें का हौसला, अब दिल में जगाना होगा
शपथ, सौंगध था प्रतिज्ञा मान ,युवाओं को परचम लहराना होगा

महापुरुषों का ऋण चुकाने ,तुमको ही आगे बढ़ना होगा
मेहनत की हर एक बूंदो से ,तुमको भी गाथा लिखना होगा।

''छत्तीसगढ़ी लोककला''



नाम– अकांक्षा साहू
मो.नं. – 7869388188
कॉलेज– सॉईस कॉलेज दुर्ग

पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हमारी पारंपरिक कलाएं ही लोक कला है। इसका कोई विशेष क्षेत्र नहीं है इसका क्षेत्र असीमित है। लोक नृत्य, संगीत, गीत, हस्तशिल्प, कथावाचन, नक्काशी, चित्रकला, भित्तिचित्र, बांस कला, नाचा, गम्मत, पंडवानी सभी लोक कला में आते हैं।

छत्तीसगढ़ की लोककला अत्यंत पुरानी व विस्तृत है। ये उत्तर में सरगुजा, सुरजपुर की प्रसिद्ध रजवार भित्तिकला जिसे घर की दिवारों पर बनाया जाता है दुर्ग के पंडवानी, धमतरी के राउत नाचा, कर्मा से लेकर बस्तर अंचल की पुरानी ढोकरा कला, लकड़ी की नक्काशी, बस्तर दशहरा, लौह कला सभी में लोक कला उपस्थित है। बच्चों के खेल में गाये जाने वाले अटकन मटकन में , दादा के कहानी में पुराने रिति रिवाजो में चौक–चौराहों में गाये जाने वाले गीतों में, गांव के बाहर से आकर बनाने सुन्दर कलाकृति में दादी के अइठी में,, तो नानी के पैरों के सुंदर लच्छे में। फागुन के नगाड़ों की ताल में जवांरा के आगे–आगे चलते सेवा गीत में,दिवाली के सुवा नृत्य में तो वही सोहर गीत में गर्मी के दिनों में जमने वाली जमघट में हंसी ठिठौली और पूछे जा रहे जनउला में बुजुर्ग द्वारा कोसे जाने पर देने वाले धारा प्रवाह गालियों मे।तो रोते बच्चे को दुलारते पुचकारते गुनगुना कर बजाने वाले ताली मे।सब में लोक कला और लोक गीत हैं।

विभिन्न प्रकार के छत्तीसगढ़ी लोक नृत्य जो कई सौ सालों से हमारे आस–पास अपना स्थान बनाये रखे रखे है –भरथरी, रेला, सुआ गीत, गउरा–गउरी, जसगीत, भोजली, ददरिया, करमा, गम्मत, घोटुल धनकुल, पंथी, बिरहा, भड़ौनी, बैना, रोन, रैला, लेजा, सोहर न जाने और भी कितने ?

आज हम छ.ग. के होकर भी इनमें से कई गीत व नृत्य को नहीं जानते हैं। लोक कला पूरे समुदाय की संस्कृति और विरासत का प्रतिनिधित्व करती है। ये जीवन का सहज रूप है। ये समुदाय के साझा विश्वास को दर्शाती है। लोक कला केवल मनुष्य तक ही सीमित नहीं है, यह मनुष्य व प्रकृति के संबंधों को भी दर्शाती है। ये पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली परंपरा की निरंतरता को दर्शाती है। इसे अर्जित नहीं किया जाता है, बल्कि यह हमारे जीवन की शैली है, जो हमारे आस–पास बिखरी हुई है।लोक कला लोक परंपरा का निर्माण करती है। ये

हमारी धरोहर है। ये केवल मनोरंजन के साधन तक ही सीमित नहीं है। ये हमारी खुशी के साथ–साथ हमारे दुख भाव, हमारे अंदर के उल्लास को भी प्रकट करती है। लोक कला जीवन के संपूर्ण क्षेत्र में उपस्थित है।

दादी के लोरी मे , त दादा के जनउला में, दीदी के सुवा म, अउ भइया के भौंरा बाटी म

कका के नांगर म, तशादी में, पड़त भाँवर में, राऊत के नाचा में, अउ गेड़ी खेलत भांचा म

ऐ सब में लोक कला हे ।

आज हम छत्तीसगढ़ के होकर भी छ.ग. के अनेक लोक कला से अनभिज्ञ हैं।वही जहॉ विभिन्न प्रदेश अपने लोक कलाओं को विश्व स्तर पर पहचान दिला रहे हैं, हमें भी इसके लिए प्रयत्न करते रहना होगा। छ.ग. की कई लोक कलाओं को पहचान मिली है और अभी ऐसी बहुत सी कला है जिसे पहचान मिलना बाकी है। आज भाग दौड़ भरे जीवन, विभिन्न तकनीकों और हर समय सुन्दरता के बदलते परिभाषा के दौर में हम अपनी लोक कला, लोक संस्कृति को भूल रहे हैं। जहां केवल इसे सिखने की नहीं बल्कि संजोने की भी जरूरत है। क्योंकि लोक कला केवल मनोरंजन या सजावट की चीज नहीं है। ये हमारे और आपके अभिव्यक्ति का तरीका है। ये हमारी परंपरा है और अंत में "लोक कला हमें औरो से अलग होने की पहचान दिलाती है।"

Folk art gives us an identity that distinguishes us from others-

नारी–अविनाशी शक्ति



नाम – प्रेमलता साहू
पिता – श्री खेलूराम साहू
कक्षा – बी.एस.सी. तृतीय वर्ष (माईक्रो बायोलॉजी)
संस्था – संत गुरू घासीदास शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुरूद
मो.नं. – 6267976480

भोली–भाली थी कभी, सपनों की थी छाँव।
विधि ने फिर जीवन में, लिख डाला इक घांव ।।
टूटी थी वह एक पल को, जैसे रुकी श्वाँस।
नयनों में बस रह गया, पीड़ा का आकाश।।
अपनों ने भी छोड़ दी, साथ की हर डोर।
अधमरी – सी जी उठी, फिर भी नाता तोड़ ।।
गिरकर भी वह उठ गई, बनकर फिर पहचान।
आँसू को शक्ति किया, खुद लिखी नई जान।।
घावों को उसने लिया, अपने दृढ़ आधार।
कमज़ोरी को मोड़कर, गढ़ डाला हथियार।।
हर ताना सहती रही, हर पीड़ा को पी।
मौन रहकर भी सदा, हिम्मत उसकी जी।।
क्षमा–दीप जब जल उठा, विस्तृत हुआ विचार।
जिसने उसको तोड़ना चाहा, वही हुआ लाचार ।।
आज वही मुस्कान फिर, जीवन में मुस्काई।
राख से उठकर नई, शक्ति बनकर छाई ।।
अब वह केवल नाम नहीं, साहस की पहचान।
हर नारी के रूप में, उसका ही सम्मान।।
जो झुकी न विपदा में, वही सच्ची नारी ।
टूटे पंखों से उड़े, वही शक्ति तुम्हारी ।।

लेख – धमतरी की सांस्कृतिक विरासत

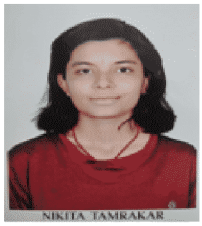

नाम– निकिता ताम्रकार
पिता– श्री गिरधारी लाल ताम्रकार
कक्षा – बी.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर
मो. नं. – 9109215023



क्या भारत केवल विकासशील देश बना रहेगा, या विश्व का नेतृत्व करेगा? आज भारत एक ऐसे महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है जहाँ से उसका भविष्य तय होगा। यह भविष्य केवल नीतियों और योजनाओं से नहीं, बल्कि देश के युवाओं की सोच, मेहनत और जिम्मेदारी से निर्धारित होगा। युवा शक्ति ही वह ऊर्जा है जो किसी भी राष्ट्र को महान बना सकती है। इसलिए कहा गया है– युवा ही बेहतर भारत का भविष्य है।

इतिहास से सीख (Historical Learning)

भारत का इतिहास हमे संघर्ष और सरलता की प्रेरणा देता है। स्वतंत्रता संग्राम में अनगिनत वीरों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया तब जाकर हमे आजादी मिली। इसी प्रकार हरित क्रांति और वैज्ञानिक उपलब्धियों ने भारत को आत्मनिर्भर बनने की दिशा दी।

इतिहास हमे सिखाता है कि यदि हम अपने अतीत से सीखते है, तो हम एक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

"जो इतिहास नहीं जानता, वह भविष्य नहीं बना सकता"

औद्योगिक क्रांति

18 वीं–19 वीं सदी में मशीनों और तकनीको ने पुरी दुनिया बदल दी –उद्योग, रोजगार, जीवनशैली सब बदल गया।

भविष्य का संबंध

आपAI डिजिटल टेक उसी तरह का बदलाव ला रहा है

जो युवा सीखेंगे– वहीं आगे बढ़ेंगे

जो नहीं सीखेंगे पीछे रह जाऐंगे.

"जिसने तकनीकी क्रांति को अपनाया, यही दुनिया में आगे बढ़ा"

चंद्रयान–3 मिशन

भारत ने कई असफलताओं से सीखकर आखिरकार चंद्रयान–3 को सफल बनाया– यह सिर्फ विज्ञान की दृढ़ता (Perseverance) का उदाहरण है।

भविष्य का संबंध

1 असफलता से डरना नही, सीखना

2 रिसर्च और नवाचार (Innovation) में आगे बढ़ना

3 भारत को विज्ञान में अग्रणी बनाना

वर्तमान भारत :

क्या आपका भारत युवाओं के लिए अवसर प्रदान करता है?

आज भारत डिजिटल क्रांति, स्टार्ट अप, संस्कृति, अंतरिक्ष विज्ञान और बुनियादी ढांचे के विकास में तेजी से आगे बढ़ रहा है।हाल के वर्षों में भारत में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की है–जैसे चंद्रयान मिशन, डिजिटल भुगतान प्रणाली की विस्तार और वैश्विक मंचों पर बढ़ती भूमिका। यह सब दर्शाता है कि भारत केवल आगे नहीं बढ़ रहा, बल्कि दुनिया को दिशा देने की क्षमता रखता है।

"अवसर वहीं मिलता है, जहाँ प्रयास और नवाचार होता है।"

युवा की भूमिका (Role of Youth)

विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा जब युवा अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे आज का युवा केवल नौकरी पाने वाला नहीं, बल्कि अवसर बनाने वाला बन सकता है।

शिक्षा और कौशल विकास पर ध्यान देना

तकनीक और नवाचार को अपनाना, समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार बननायदि युवा सही दिशा में आगे बढ़े, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

"युवा की सोच ही देश की दिशा तय करती है।"

हालाँकि भारत के सामने कई चुनौतियाँ भी है –

- बेरोजगारी
- शिक्षा में असमानता
- गलत जानकारी और भटकाव
- सामाजिक विभाजन

ये समस्याएँ विकास के मार्ग में बाधा बन सकती है। लेकिन इन्हें अवसर में बदला जा सकता है।

"चुनौतियाँ ही हमें मजबूत बनाती है।"

समाधानः भविष्य बनाने के लिए युवा क्या करे ?

शिक्षा + स्किल पर फोकस

सिर्फ डिग्री नही SKILLS सीखो A1 डिजिटल (Communication)

Innovation और startup सोच

नौकरी ढूंढने के बजाय नौकरी देने वाले बनो

नये Ideas पर काम करो

संस्कृति और मूल्यों की रक्षा

अपनी भाषा, परम्परा और संस्कृति पर गर्व करो

आधुनिक बनो, लेकिन जड़ों से जुड़े रहो

अनुशासन और मेहनत

समय का सही उपयोग

सही स्रोत से जानकारी लो

इतिहास और वर्तमान समझो

क्या हम विकसित भारत का सपना साकार कर सकते है ?

हाँ, यदि हर युवा जागरूक, शिक्षित और जिम्मेदार बने।

भारत का भविष्य किसी एक व्यक्ति या सरकार पर निर्भर नहीं है, बल्कि हर युवा के प्रयास, सोच और कर्म पर आधारित है।

''हम बदलेंगे युग बदलेगा''

''युवा जागेगा तो भारत आगे बढ़ेगा''

''देश बदल रहा है, अब आपकी बारी है।''

लेख – धमतरी की सांस्कृतिक विरासत



नाम – गुलशन कुमार
पिता – जीवन लाल
शिक्षा – हार्टीकल्चर रिसर्च स्टेशन धमतरी
मो.न. – 7724923657

(1) प्रस्तावना :– जिस प्रकार तार के बिना, वीणा और धुरी के बिना रथ का पहिया बेकार हो जाता है, उसी तरह नारी के बिना मनुष्य का सामाजिक जीवन। इस सच्चाई को भारतीय ऋषियों ने बहुत पहले जान" लिया था। वैदिक काल में मनु ने यह घोषणा करके–कहा कि जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। नारी की महत्ता" प्रतिपादित की। यंत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता।।

(2) वैदिक काल – वैदिक काल में प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में नारी की, उपस्थिति आवश्यक थी। कन्याओं को पुत्रों के बराबर अधिकार प्राप्त थे, उनकी शिक्षा. दीक्षा का समुचित प्रबन्ध था। मेत्रैयी, मार्गी जैसी स्त्रियों की गणना ऋषियों के साथ होती है।

(3) वीरांगनाएँ :– मुस्लिम युग में पद्मनी, दुर्गावती, अहिल्याबाई जैसे नारियों ने अपने बलिदान एवं योग्यता से भारतीय नारी का गौरव बढ़ाया है। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी की रानी को कौन भूल सकता है।

(4) प्राचीन काल की नारी :– कोई भी क्षेत्र नारी के लिए वर्जित नहीं था। वे रणभूमि में जौहर दिखाया करती थी तथापि उनका मुख्य कार्य क्षेत्र घर था। उससे शिक्षा व स्वतंत्रता के अधिकार छीन लिये गये थे। फिर भी नारियों ने अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

(5) वर्तमान स्वरूप :– नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो, शिक्षित हो, पुरुष की दासता से मुक्त हो यह अच्छी बात है, किन्तु स्वतंत्रता की अति न पुरुष के लिए शुभ है न ही नारी के लिए। दोनों के लिए एक समान सामाजिक एक दायित्व होना चाहिए।

आज कल हमारे देश की नारियाँ सभी क्षेत्र में बेहतर, प्रदर्शन कर रही है। आज हमारे देश की बेटियाँ वाहन से रेल तक तथा पायलेट बनकर तथा सभी क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान प्रदान कर रहे है।

(6) उपसंहार :– आज विश्व युद्धों से भयभीत है। सर्वत्र अशान्ति है। ऐसे, विषम समय में नारी में उन गुणों के विकास की जरूरतें है; जो उसे परम्परा से प्राप्त है। वह सभी का सूख चाहती है। वह संघर्ष नही त्याग और ममता की देवी है। वह शक्ति भी है। जो दानवों का विनाश करती है । वह नव निर्माण की शक्ति है। जो मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाती है।

भारतीय नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह प्रत्येक युग में किया है। वह अपने विशिष्ट गुणों के कारण आधुनिक युग में भी पुरुषों से कन्धें से कन्धा मिलाकर हर क्षेत्र में कार्य कर रही है। यह अवश्य हुआ है कि वह बाह्य क्षेत्रों में जितनी प्रगति कर रही है। उतनी ही कुशलतापूर्वक वह प्रगति के अनेक सोपानों पर चढ़ने के लिए. अभी भी अथक प्रयत्न कर रही है।

"नारी शिक्षा में सर्वप्रथम शिक्षा को नारियों के लिए दिलाने वाली सावित्री बाई फुले को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।।

लेख – धमतरी की सांस्कृतिक विरासत



नाम– तोषेन्द्र कुमार साहू
पिता का नाम – श्री उदेराम साहू
ग्राम व पोस्ट – दुधली (मालीघोरी) जिला–बालोद (छ.ग.)
मोबाईल नंबर – 9131651208

प्रस्तावना– छत्तीसगढ़ की पावन धरती पर बसा धमतरी जिला अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, अद्भूत प्राकृतिक सौंदर्य और लोक जीवन की सरलता के लिए एक विशिष्ट पहचान रखता है। यह क्षेत्र केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना के स्तर पर भी अत्यंत समृद्ध है। यहां की मिट्टी में परंपराओ की सुगंध बसी हुई है, और लोगों के जीवन में संस्कृति की गहरी छाप सहज रूप से दिखाई देती है।

ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल– धमतरी की पहचान उसके ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों से भी जुड़ी हुई है। सिहावा पर्वत जहाँ से महानदी का उद्गम होता है। इस जिले की आस्था और प्राकृतिक संगम का सजीव प्रतीक है। घने जंगलो की हरियाली, शांत वातावरण और बहती हुई जलधाराओं की मधुर ध्वनि यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के मन को शांति, श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा से भर देती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति स्वयं यहा जीवन का संगीत गुनगुना रही हो।

धमतरी की लोक संस्कृति में नृत्य और संगीत आत्मा की तरह बसे हुए हैं। गांवों में जब त्यौहारों और उत्सवों का आगमन होता है, तब करमा नृत्य, राऊत नाचा और पंथी जैसे लोकनृत्य पूरे वातावरण की जीवंत कर देते हैं। ढोलक, मंजीरा और नगाड़ों की थाप पर थिरकते कदम जीवन के उत्साह और उल्लास का अद्भुत चित्र प्रस्तुत करते हैं। यहां के लोकगीतो में प्रेम, प्रकृति और जीवन की सच्चाइयों की ऐसी मधुर अभिव्यक्ति होती है, जो सीधे हृदय की गहराइयों को स्पर्श कर जाती है।

सांस्कृतिक विरासत– धमतरी की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण पक्ष यहां की पारंपरिक कला और शिल्प है। बांस और लकड़ी से बनी उपयोगी वस्तुएं, मिट्टी के सुंदर बर्तन और हस्तनिर्मित कलाकृतियाँ यहां के कारीगरो की अद्वितीय प्रतिभा का प्रमाण है। इन कलाओं में केवल सौंदर्य ही नहीं, बल्कि जीवन की उपयोगिता और परंपरा का गहरा संबंध भी निहित है।

प्रत्येक कलाकृति में कलाकार की मेहनत, समर्पण और भावनाओं की झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

मेले और त्यौहार– यहाँ के मेले और त्यौहार धमतरी की सांस्कृतिक जीवंतता को और भी प्रखर बनाते है। विशेष अवसरों पर लगने वाले ग्रामीण मेले न केवल व्यापार के केंद्र होते हैं, बल्कि सामाजिक मेल–जोल, आनंद और उत्सव के सशक्त माध्यम भी बनते हैं। इन मेलो में लोकनृत्य, गीत–संगीत और पारंपरिक व्यंजनों की सुगंध लोगों को अपनी संस्कृति की गहराई से जोड़ देती है।

जनजीवन एवं अतिथि सत्कार की भावना– धमतरी का जनजीवन सादगी, आत्मीयता और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण है। यहाँ के लोग अपनी परंपराओं और रीति–रिवाजो को गर्व और सम्मान के साथ निभाते हैं। अतिथि सत्कार की भावना और आपसी प्रेम इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता है, जो हर आगंतुक को अपना बना लेती है।

आज के आधुनिक युग में, जब परिवर्तन की तेज लहरें समाज को प्रभावित कर रही है, तब भी धमतरी अपनी सांस्कृतिक जड़ों की मजबूती से थामे हुए है। यह हमे यह संदेश देता है कि विकास के साथ–साथ अपनी परंपराओ और संस्कृति का संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। घने जंगलो और शांत वातावरण से घिरी यह नगरी लोगों को आध्यात्मिक शांति प्रदान करती है। इसके आलावा गंगरेल डेम भी इस जिले का एक महत्वपूर्ण स्थल है, जहाँ स्थित माता अंगारमोती का मंदिर श्रद्धा और भक्ति का केंद्र है।

निष्कर्ष– धमतरी की सांस्कृतिक विरासत एक ऐसे सुगंधित पुष्प के समान है, जिसकी खुशबू दूर–दूर तक फैलकर घर हृदय की आनंद और शांति से भर देती है। यह केवल एक स्थान नहीं, बल्कि भावनाओं, परंपराओ और जीवन मूल्यों का ऐसा पावन संगम है, जो हर किसी के मन में अपनी अमिट छाप छोड़ जाता है। जो आज भी अपनी सादगी सुंदरता और आत्मीयता से लोगों के हृदय को आकर्षित करती है।

महानदी



नाम– टुकेश्वरी साहू
कक्षा– एम.ए.हिंदी चतुर्थ समेस्टर
शास. सुखराम नागे महाविद्यालय नगरी
मो.न. – 9238374034

महानदी जीवन की धारा :–

महानदी भारत की प्रमुख नदियों में से एक है, जो अपने शांत प्रवाह और विशाल रूप के कारण विशेष महत्व रखती है। इसका उद्‌गम स्थान छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के सिहावा पवर्त पर है। यह छत्तीसगढ़ और ओड़िसा से होकर बहती हुई अंत में बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। महानदी केवल एक जलधारा नहीं हैं, बल्कि यह लोगों के जीवन का आधार है। महानदी का नाम ही उसके महत्व को दर्शाता है – 'महान' अर्थात् विशाल होता है और शक्तिशाली। यह नदी अपने रास्ते में अनेक गाँवों और शहरों को जीवन देती है। महानदी के किनारे बसे लोगों का जीवन इस नदी में गहराई से जुड़ा हुआ है। सुबह की शुरुआत अक्सर नदी के तट पर होती है, जहाँ लोग स्नान करते हैं, दिन की नई शुरुआत करते हैं। त्यौहारों और धार्मिक अवसरों पर महानदी का विशेष महत्व है। लोग इसे पवित्र मानते हैं और महानदी की पूजा करते हैं।

महानदी के किनारे प्राकृतिक सौन्दर्य भी बहुत अच्छा है। हरे–भरे पेड़, कल–कल बहता पानी और पक्षियों की मधुर आवाजें वातावरण को शांत और सुखद बनाती हैं। महानदी का यह रूप लोगों को प्रकृति के करीब लाता है और मन को शांति देता है। महानदी केवल प्राकृतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस पर बने बाँध जैसे हीराकुंड बाँध जल संरक्षण और बिजली उत्पादन में मदद करते हैं।

आज के समय में महानदी को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है – बढ़ता प्रदूषण, प्लास्टिक का उपयोग और जल का अत्यधिक दोहन, नदी के अस्तित्व के लिए खतरा बन रहें हैं। अगर समय रहते इन समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया गया तो इसका प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा।

महानदी केवल नदी ही नहीं, बल्कि जीवन की धारा है। यह हमें जीने का आधार देती है और प्रकृति से जोड़कर रखती है।

''महानदी''

छत्तीसगढ़ के दुलारी बेटी, चारों मुड़ा बोहावत धान के कटोरा ला भरे बर आवत हे।

नाम– गौरव सिन्हा
पिता – इतवारी सिन्हा
कक्षा – बी.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर
कॉलेज– बी.सी.एस. पी.जी. कॉलेज धमतरी
मो.नं.– 9238175757



प्रस्तावना–महानदी छत्तीसगढ़ की जीवनदायिनी नदी है। यह छत्तीसगढ़ को पिछले अनेक वर्षों से सिंचित करती आ रही है। महानदी के अतिरिक्त इसका नाम चित्रोत्पला एवं कनकनंदिनी है। यह छत्तीसगढ़ की वन उपज संपदा से परिपूर्ण करने में सहायक है। इसके साथ ही साथ छत्तीसगढ़ के विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के जल स्तर को बढ़ाने में सहायता प्रदान करती है।

उद्‌गम स्थल–महानदी का उद्‌गम स्थल धमतरी जिले से 65 कि.मी. दूर सिहावा कें श्रृंगी ऋषि पर्वत में स्थित श्रृंगी ऋषि आश्रम के पास जल कुंड से हुआ है। श्रृंगी ऋषि के प्रिय शिष्य महानंद पर इस नदी का नाम महानदी पड़ा।

महानदी की कुल लम्बाई–महानदी सिहावा पर्वत से निकल कर विभिन्न तीर्थस्थलों से होकर कटक के समीप बंगाल की खाड़ी में जाकर मिलती है। **इसकी कुल लम्बाई 851 कि.मी है** तथा छत्तीसगढ़ में इसकी लम्बाई 286 कि.मी तक बहती है।

प्रमुख सहायक नदियाँ–शिवनाथ, पैरी, हसदो आदिप्रमुख तीर्थस्थल–राजिम, शिवरीनारायण, सिरपुर आदि।प्रमुख जलाशय/बांध–पं. रविशंकर शुक्ल जलाशय, रूद्री बाँध, हीराकुंड बाँध।**वर्तमान में महानदी हेतु चिंतनीय विषय महानदी का गिरता जलस्तर**–महानदी जलाशयों में पिछले कुछ वर्षों की तुलना में जलस्तर काफी गिरा है, जो चिंतनीय है और भविष्य में आने वाली समस्या से अवगत कराता है।महानदी पर बढ़ता अवैध रेत खनन–महानदी में अवैध रेत खनन बढ़ता जा रहा है जिससे प्रशासनिक राजस्व मेंनुकसान के साथ महानदी के खनिज संपदा भी प्रभावित हो रही है।बाँध की स्थिति–महानदी पर विभिन्न बाँध निर्मित हैं जो पिछले अनेक वर्षों से स्थापित हैं और अनेक समय से कार्यरत हैं जिसके परिणाम स्वरूप अब उनकी स्थिति जर्जर होती जा रही है।

नदी पर होने वाला प्रदूषण–नदी तट पर विभिन्न मेलों एवं उत्सव के परिणाम स्वरूप नदी में कचरा फेंका जाता है जिससे नदी के साथ जलीय जीव प्रभावित हो रहे हैं।

सिंचाई व्यवस्था से घटता जलस्तर–अत्यधिक सिंचाई हेतु जल की आवश्यकता के परिणाम स्वरूप बाँध क्षेत्र में जल का स्तर कम हो रहा है।

समस्याओं के निवारण हेतु विचार :–.

01. बिना अनुमति जल स्रोत खनन पर रोक एवं जल का निःशुल्क एवं सीमित उपयोग को बढ़ावा देना।
02. रेत खनन पर प्रशासनिक कड़ाई –अवैध रेत खनन को कम करने के लिए प्रशासन की कड़ाई ही एकमात्र रास्ता है जिससे रेत माफिया को कम किया जा सके।
03. बाँध की स्थिति सुधारने अनुदान राशि –बाँध की स्थिति को सुधारने के लिए प्रशासन के द्वारा अनुदान राशि का आवंटन करना।
04. नदी तट पर क्लीन जोन बनाना –नदी तट पर क्लीन जोन निर्माण से वहां कचरा कम होने पर प्रदूषण को कम किया जा सकता है।
05. सिंचाई समस्या – गर्मी के दिनों में जल स्तर कम होता है ऐसे में गर्मी के दिनों में धान की खेती से समस्या उत्पन्न हो जाती है और अधिक जल का स्तर कम हो जाता है इस कारण गर्मी के दिनों में धान की खेती पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष – आज हम जिस महानदी को देखते हैं और छत्तीसगढ़ की बेटी कहते हैं वह वास्तविक में समस्याओं से बँधी हुई है और प्रदूषण और गिरता जल स्तर इसकी शोभा को कम कर रहा है हमें मिलकर इन समस्याओं का निवारण करना चाहिए।

कविता का शीर्षक –''नारी शक्ति''
नारी: चेतना और शौर्य का सार



नाम – संदीप
पिता – महेंद्र
कोर्स – बी.एस.सी तृतीय वर्ष (गणित)
संस्था – बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी
निवास – ग्राम– उसरवारा, पोस्ट–फागुनदाह,
तहसील–गुरूर, जिला–बालोद
संपर्क – 7610511287

सृष्टि का वह मूल है, वह स्नेह की सरिता बहे,
त्याग की वह मूर्ति है, हर शूल को हँसकर सहे।
वह भवानी, वह रुद्राणी, विश्व की आधार है,
नारी केवल देह नहीं, वह चेतना का सार है।
दहेज की उस आग से, या भ्रूण हत्या के पाप से,
लड़ रही है आज नारी, हर कुरीति के संताप से।
आँसुओं को पोंछकर, हाथों में थामी है मशाल,
अन्याय के विरुद्ध वह, बन चुकी है एक ढाल।
कोख में जीवन पले, तो वक्ष पर ममता खिले,
पर अगर ललकार दो, तो चंडी का स्वरूप मिले।
वह दया की छाँव है, और अग्नि की वह ज्वाल है,
दुष्टता के वास्ते, साक्षात वह महाकाल है।
याद कर लो झाँसी वाली, उस प्रखर सी कीर्ति को,
रणभूमि में गरजती, उस वीर सी क्षत्राणी को।
पीठ पर बाँधे सुत को, शत्रु दल को काटती,
वह अकेली ही समर में, मृत्यु को थी बाँटती।
पेड़ों से जाकर चिपक गई, गौरा देवी भेष में,
प्रकृति की रक्षक बनी वह, इस हमारे देश में।
कुल्हाड़ियों के वार से, वह तनिक भी ना डरी,
वन–संपदा को बचाने, वह हिमालय पर अड़ी।
आज अंतरिक्ष में भी, बज रहा उसका डंका,
मंगलयान की सफलता पर, रही ना कोई शंका।
साड़ी पहने भाल पर बिंदी, गगन को छू लिया,
इसरो की उन नारियों ने, विश्व को विस्मित किया।
कल्पना – सी बन परी, वह तारों के भी पार है,
विज्ञान के हर पृष्ठ पर, उसका ही अधिकार है।
स्वप्न को सच कर दिखाया, जान की बाजी लगा,
हर युवा के हृदय में, एक नया साहस जगा।
खेल के मैदान में भी, गूंजती हुंकार अब,
स्वर्ण पदकों की झड़ी से, सज रहा दरबार अब।
मैरी कॉम के मुक्कों में, या पी.टी. की वो दौड़ हो,
सिद्ध कर दिया कि शक्ति में, ना कोई भी होड़ हो।
सीमाओं पर डटी है वह, पहनकर अब वर्दियाँ,
वायुयान को उड़ातीं, चीरकर सब सर्दियाँ।
अवनि सी भर रही है, आसमान में वो उड़ान,
शत्रुओं के कांपते हैं, देखकर ये आन–बान।
वंदना तेरी करे, यह विश्व सारा आज है,
गर्व से उन्नत हुआ, भारत का यह समाज है।
हे ! अपराजिता उठो, नव सूर्य तुमको चूम ले,

शीर्षक – एक अक्षर माँ



डॉ. शैलेन्द्र कुमार गुप्ता
''अद्वितीय''
धमतरी छत्तीसगढ़
मो. 7828506874

एक अक्षर माँ जीवन जन्मदात्री हो ईश्वर का मानो प्रतिरूप!
तेरे आंचल की छाँव हो और तेरे होने की आस रहे!!

एक अक्षर माँ बिन अधूरा जीवन हो गया जग सारा सूना!
बस एक तेरे दया करुणा प्यार भरी ममता की प्यास रहे!!

एक अक्षर माँ तेरे होने से न हुआ कभी किसी का भय!
ईश्वर करे इस अधूरे तन्हा जग में अनंत तेरा उजास रहे!!

एक अक्षर माँ की ममता हो सदा मिले आशीर्वाद उनका!
सिवा कुछ नहीं इसके और ईश्वर से हमारा विश्वास रहे!!

एक अक्षर माँ तेरा गुस्सा वो लाड वो प्यार वो मीठी मार!
लगता है जीवन भर तेरे लाड़ प्यार मार की मीठी मिठास रहे!!

एक अक्षर माँ तेरा होने से सब कुछ होता सोचे मन बार–बार!
एकाकीपन में तेरा न होना जीवन भर उसकी खटास रहे!!

एक अक्षर माँ तेरे होने से ही रंगत होती हमारे महफिल की!
छोड़ गई अनायास हमको बिन तेरे कैसे हमारा आवास रहे!!

एक अक्षर माँ देखती तू अपने पोती पोतों के मंगल काज!
ईश्वर की कैसी लीला इस जग से तेरा चले जाना अनायास रहे!!

एक अक्षर माँ तू ''अद्वितीय'' नाम अलौकिक अनमोल सदा!
बसेगी तू ही दिल में सदा हर बार सोच दिल तुझे रुआँस रहे!!

एक अक्षर माँ तू छोटे मोटे दर्द में हमारी जागा करती सारी रात!
मौका न मिला हमको तेरी सेवा का दिल में यही अफसोस रहे!!

एक अक्षर माँ तुझे ही चाहा माँगा हरदम हमेशा जीवन भर!
छिन लाएं तुझे मौत से जीत कर हर वक्त यही हमारा प्रयास रहे!!

एक अक्षर माँ तेरी प्यार ममता वात्सल्य फिर बरसे मुझ पर!
हर जन्म में तू ही माँ बन आये ईश्वर से मेरा यही विश्वास रहे!!

एक अक्षर माँ जीवन जन्मदात्री हो ईश्वर का मानो प्रतिरूप!
तेरी आँचल की छाँव हो और तेरे होने की आस रहे!!

मेरी माँ – मेरी पहचान



नाम - अपर्णा शर्मा (लोकाव्या)
शिक्षा - एम.एस.सी. (रसायन शास्त्र)
कॉलेज - बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी
मो.नं. - 8817068077

मेरी हर धड़कन की आवाज, मेरी हर खुशी का अरमान हो तुम,
क्या कहूँ माँ तेरे बारे में, मेरी पूरी दुनिया और सम्मान हो तुम...



नौ महीनों तक अपने आंचल में जीवन को संजोकर,
ममता और त्याग की सबसे सुंदर मिसाल हो तुम...

मेरी छोटी–बड़ी हर चाहत को जिसने बिना कहे समझा,
मेरे सपनों को सच करने वाली जादुई मुस्कान हो तुम...

सही और गलत की राह दिखा कर जिसने जीवन सँवारा,
मेरे लए सच्चाई और संस्कार की पहचान हो तुम...

जब भी मन उदास हो और आँखें नम हो जाएँ,
एक पल में दर्द मिटा देने वाली दवा हो तुम...

जिसका साथ हर मोड़ पर बिना शर्त बना रहे,
मेरी जिंदगी की सबसे प्यारी परछाई हो तुम...

दुनिया चाहे मुझे समझे या न समझे,
पर जो हर हाल में मेरा विश्वास बने,
मेरी पहली और सच्ची दोस्त हो तुम...

दिवाली की रौशनी में हमारी खुशियाँ सजाने को,
अपनी इच्छाओं को चुपचाप भुला देने वाली,
त्याग और ममता की अनुपम प्रतिमा हो तुम...

जब घर में कुछ स्वादिष्ट आए और
तुम अपना हिस्सा भी हमें दे दो,
ऐसी निस्वार्थ मोहब्बत और
भलाई का अथाह सागर हो तुम...

जिसकी बेटी कहलाना मेरे लिए गर्व और सौभाग्य है,
मेरे जीवन की सबसे अनमोल दौलत हो तुम...

माँ,
मेरे लिए तुम केवल एक रिश्ता नहीं,
मेरी शक्ति, मेरी पूजा और मेरा पूरा संसार हो...

कहानी :– युवा बेहतर भारत का भविष्य



नाम – योगिता साहू
पिता – खेमुराम साहू
कक्षा – एम. ए. हिन्दी साहित्य,
संत गुरु घासीदास महाविद्यालय कुरुद
पता – चोरभट्ठी,
मो.न. – 6260293105,

सिहावा की पहाड़ियों से निकली महानदी की तरह ही यह कहानी उस गरीब परिवार की है जो संघर्ष करते हुए युवा पीढ़ी को जीवन में आगे बढ़ने का संदेश देती है।

भोर बेला की पहली किरण ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सूर्य की पहली किरण इस दुनिया में अपना प्रकाश बिखेरने हेतु पुलकित हो और आकाश में मुस्काती हुई अपनी लालिमा सूर्य के चारो ओर फैला रही हो।

यह सब प्रक्रिया राजशेखर की पत्नी बिमला देखकर बहुत देर से महसूस कर रही थी और हर्ष का अनुभव कर रही थी। राजशेखर गौरीपुर गांव का एक गरीब किसान था, जो अपना दो एकड़ की जमीन में खेती करता साथ में मजदूरी कर घर का पालन–पोषण करता था। राजशेखर बहुत ही संघर्ष से परिवार चलाता था। राजशेखर के एक बेटा और दो बेटियाँ थी, जिसका नाम क्रमशः राघव और तनु, दीया है। राजेश्वर की पत्नी बिमला धार्मिक स्वभाव की थी और पूजा पाठ में विश्वास करती थी। बिमला अपनी दोनों बेटियों को रामायण भागवत का ज्ञान देती थी।

बिमला हर प्रातः उठकर सूर्य देव को जल अर्ध्य अर्पण कर अपना कार्य प्रारंभ करती, यह कार्य किसी एक दिन नहीं बल्कि रोजाना का दिनचर्या है, इससे बिमला के घर में सुख शांति बनी रहती।

राजशेखर का बेटा राघव बचपन से ही होनहार था, वह कक्षा में हमेशा अव्वल आता था। राघव अपने पिता को बचपन से मजदूरी करता देखा है, इतना परिश्रम करके परिवार चलाता था। राघव बहुत दुखी होता था, वह बचपन से कुछ नया बदलाव की सोचता था। बचपन से ही उन्होने ठान लिया था बड़ा बनके कुछ बड़ा काम ही करूंगा। राघव कक्षा में अच्छा अंक लाता था इससे उसकी पढ़ाई में मद्द मिलता। राघव को हर कक्षा में स्कालरशिप मिलता। दोनो बहन तनु दीया माँ के साथ काम में हाथ बटाती और पढ़ाई में भी ठीक थी।

राजशेखर का बेटा राघव पूरा राज्य में कक्षा 12 वीं में प्रथम आया, जिसे विदेश में पढ़ाई करने का सुनहरा अवसर मिला। राघव अपनी माँ से कहता माता तुम हार मत मानना एक दिन सब ठीक होगा। राजशेखर अपने पुत्र से कहता – बेटा तुम मेरा ही नहीं पूरे देश का भविष्य हो, तुम्हें देश में बदलाव लाना होगा, मेरे जैसे गरीब परिवार का सहारा बनना होगा।

राघव – जी पिता जी मैं आपका सपना पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ।

राजशेखर – मुझे आपके ऊपर पूरा भरोसा है, युवा अगर ठान लें तो वे समस्याओं का रोना रोने के बजाए समाधान बन सकते हैं।

युवा पीढ़ी केवल भविष्य नहीं है, बल्कि वर्तमान समाज को बदलने की बड़ी शक्ति है।

:: धन्यवाद ::